

दानिय्येल

दानिय्येल क बाबुल लइ जावा जाब

1 नबूकदनेस्सर बाबुल क राजा रहा। नबूकदनेस्सर यरूसलेम क चारिहूँ कईती स घेर लिहस। इ तब भवा जब यहूदा क राजा यहोयाकीम क हुकूमत क तीसर बरिस चलत रहा। 2 यहोवा यहूदा क राजा यहोयाकीम क नबूकदनेस्सर क जरिये पराजित कराइ दिहस। नबूकदनेस्सर परमेस्सर क मन्दिर क कछू बर्तनन क भी हथियाइ लिहस। नबूकदनेस्सर ओन वस्तुअन क बाबुल लइ गवा। नबूकदनेस्सर ओन वस्तुअन क उ मन्दिर में रखवाइ दिहस जेहमाँ ओकर देवतन क मूर्तियन रहिन।

3 एकरे पाछे राजा नबूकदनेस्सर असपनज क एक हुकूम दिहस। (असपनज राजा क हिंजड़े-नौकरन क प्रधान रहा।) राजा असपनज क कछू इस्त्राएली लइकन क ओकरे महल में लिआवइ क कहे रहा। नबूकदनेस्सर चाहत रहा कि प्रमुख परिवारन अउ इस्त्राएल क राजा क परिवार क कछू इस्त्राएली लइकन क हुवाँ लिआवा जाइ।

4 नबूकदनेस्सर क सिरिफ हट्टे कट्टे नउजवान इस्त्राएली लइकन ही चाही रहा। राजा क बस अइसे नउजवान लइकन क चाही रहा जेकरे तने पइ कउनो खरोंच या ओनकर तन कउनो भी तरह क दोख स रहित होइ। राजा सुन्नर, चुस्त अउ बुद्धिमान नउजवान लइकन ही चाहत रहा। जउन बातन क हाली स अउ आसानी स सीखइ में समरथ होइँ। राजा क अइसे नउजवान लइकन क जरूरत रही जउन ओकरे महल में सेवा क काम कइ सकइँ। राजा असपनज क हुकूम दिहस कि ओन इस्त्राएली नउजवान लइकन क कसदियन क भाखा अउ लिपि क सिच्छा दीन्ह जाइ।

5 राजा नबूकदनेस्सर ओन नउजवानन क हररोज एक निहचित मात्रा में भोजन अउ दाखरस देत रहत रहा। इ भोजन उहइ तरह क होत रहा, जइसा खुद राजा खावा करत रहा। राजा क इच्छा रही कि इस्त्राएल क ओन नउजवानन क तीन बरिस तलक प्रसिच्छण दीन्ह जाइ अउ तीन बरिस क पाछे उ सबइ नउजवान राजा क सेवक बन सकइँ।

6 ओन नउजवानन में दानिय्येल, हनन्याह, मीसाएल अउ अजर्याह सामिल रहेन। इ सबइ नउजवान यहूदा क परिवार समूह स रहेन। 7 तउ एकरे पाछे यहूदा क ओन नउजवानन क असपनज नवा नाउँ रख दिहस। दानिय्येल क बेलतसस्सर क नवा नाउँ दीन्ह गवा। हनन्याह क नवा नाउँ रहा सद्रक। मीसाएल क नवा नाउँ दीन्ह गवा मेसक अउ अजर्याह क नवा नाउँ रखा गवा अबेदनगो।

8 दानिय्येल राजा क उत्तम भोजन अउ दाखरस क ग्रहण करइ नाहीं चाहत रहा। दानिय्येल नाहीं चाहत रहा कि उ उ

भोजन अउ उ दाखरस स अपन आप क असुद्ध कइ लेइ। तउइ तरह अपन आप क असुद्ध होइ स बचावइ बरे असपनज स बिनती किहस।

9 परमनउजवानोस्सर असपनज क अइसा बनाइ दिहस कि उ दानिय्येल क बरे कृपालु अउर नीक विचार करइ लाग। 10 किन्तु असपनज दानिय्येल स कहेस, “मई आपन सुआमी, राजा स डरोत हउँ। राजा मोका हुकूम दिहस ह कि तोहका इ भोजन अउर इ दाखरस दीन्ह जाइ। जदि तू इ भोजन क नाहीं खात अहा तउ तू दुर्बल अउ रोगी देखाइ लगब्या। तू आपन उमिर क दूसर नउजवानन स भद्दा देखाइ देब्या। राजा एका लखी अउ मोह पइ किरोध करी। होइ सकत ह, तू मोर मुइँ कटवाइ देइ। जबकि इ दोख तोहार होइ।”

11 एकरे पाछे दानिय्येल आपन देखभाल करइवालन से बातचीत किहस। असपनज उ रखवारे क दानिय्येल, हनन्याह, मीसाएल अउ अजर्याह क ऊपर धियान रखइ क कहा भवा रहा। 12 दानिय्येल उ रखवारे स कहेस, “कृपा कइक तू दस दिन तलक हमार परीक्षा ल्या। हमका खाइ क साग-सब्जी अउर पिअइ क पानी क अलावा कछू जिन द्या। 13 फुन दस दिन क पाछे ओन दूसर नउजवानन क संग तू हमार तुलना कइके लखा, जउन राजा क भोजन करत हीं अउर फुन अपने आप लखा कि अधिक तन्दुरुस्त कउन देखाइ देत ह। फिन तू अपने-आप यह निर्ग्या कर्या कि तू हमरे संग कइसा बेउहार करइ चाहत ह। हम तउ तोहार सेवक अही।”

14 तउ उ रखवारा दानिय्येल, हनन्याह, मीसाएल अउ अजर्याह क परीच्छा लिहस। 15 दस दिना क पाछे दानिय्येल अउ ओकर मीत ओन सबहिं नउजवानन स जियादा हट्टा-कट्टा देखीँ देइ लागेन जउन राजा क खइया क खात रहेन। 16 तउ उ रखवारा ओनका राजा क उ खास भोजन अउ दाखरस देब बंद कइ दिहस अउर उ दानिय्येल, हनन्याह, मीसाएल अउ अजर्याह क उ खाइ क जगह पइ साग-सब्जियन देइ लाग।

17 परमेस्सर दानिय्येल, हनन्याह, मीसाएल अउ अजर्याह क बुद्धि प्रदान किहस अउ ओनक अलग अलग तरह क लिपियन अउ विग्यानन क सीखइ क जोग्गता प्रदान किहस। दानिय्येल तउ हर तरह क दर्सनन अउ सपनन क भी समुझ सकत रहा।

18 राजा चाहत रहा कि ओन सबहिं जवानन क तीन बरिस तलक प्रसिच्छन दीन्ह जाइ। प्रसिच्छन क समइ पूरा होइ पइ असपनज ओन सबहिं जवानन क राजा नबूकदनेस्सर क लगे लइ गवा। 19 राजा ओनसे बातन किहस। राजा पाएस कि ओनमाँ स कउनो भी जवान ओतना नीक नाहीं रहा जेतना

दानियेल, हनन्याह, मिसाएल अउ अजर्याह रहेन। तउ उ सबइ चारिउँ जवान राजा क सेवक बनाइ दीन्ह गएन।

20राजा हर दाई ओनसे कउनो महत्वपूर्ण बात क बारे में पूछत अउ उ पचे आपन प्रचुर गियान अउ समुझ-बूझ क परिचय देतेन। राजा लखेस कि उ पचे चारिउँ ओकर राज क सबहि जादुगसन अउ बुद्धिमान लोगन स दस गुणा जियादा उत्तिम अहई। 21तउ राजा कुसू क सासन काल क पहिले बरिस तलक दानियेल राजा क सेवकाई करत रहा।

नबूकदनेस्सर क सपना

2 नबूकदनेस्सर आपन सासन क दूसर बरिस में एक सपना लखेस। उ सपना स बेचैन होइ गवा अउर सोइ नहीं सका। 2तउ राजा आपन जादूगसन, ओझन, भविस्स क बात बताइवालन अउर कसदियन* क आपन सपना क अरथ बतावइ बरे बुलाएन। एह बरे उ सबइ आपन अउर राजा क समन्वा खड़ा होइ गएन।

3तब राजा ओन लोगन स कहेस, “मई एक सपना लखेउँ ह जेहसे मई बियाकुल हउँ। मई इ जानइ चाहत हउँ कि उ सपना क अरथ का बाटइ?”

4यह पइ ओन कसदियन राजा स उत्तर देत भए कहेन। उ सबइ अरामी भाखा में बोलत रहेन। “राजा चिरंजीव रहई। हम पचे तोहार दास अही। तू आपन सपन हमका बतावा। फिन हम तोहका ओकर अरथ बताउब।”

5एह पइ राजा नबूकदनेस्सर ओन लोगन स कहेस, “नहीं। उ सपना का रहा, इ भी तोहक ही बताउब अहइ अउर उ सपन क अरथ का अहइ, इ भी तोहका ही बताउब अहइ अउर जदि तू अइसा नहीं कइ पाया तउ मई तोहार टूकन टूकन कइ डावइ क आग्या देब। मई तोहरे घरन क तोरिके मलवा क देर अउ राखी में बदल डावइ क आग्या भी दइ देब। 6अउ जदि तू मोका मोर सपना बताइ देत अहा अउर ओकर व्याख्या कइ देत अहा तउ मई तोहका अनेक उपहार, बहोत स पुस्कार अउ महान आदर प्रदान करब। तउ तू मोका मोर सपना क बारे में बतावा अउर बतावा कि ओकर अरथ का अहइ?”

7ओन बुद्धिमान मनइयन राजा स फुन कहेन, “हे राजा, कृपा कइके हमका सपना क बारे में बतावा अउर हम तोहका इ बताउब कि उ सपना क फल का अहइ।”

8एक पइ राजा नबूकदनेस्सर कहेस, “मई जानत हउँ, तू लोग अउर जियाद समइ लेइ क जतन करत अहा। तू जानत अहा कि मई जउन कहेउँ, उहइ मोर अभिप्राय अहइ। 9तू इ जानत अहा कि जदि तू मोका मोर सपना क बारे में नहीं बताया तउ तोहका दण्ड दीन्ह जाइ। एह बरे तू पचे आपुस में जोजना बाएस क कि मोहसे झूठ बोलइ अउर गलत व्याखाय करब जब तलक कि स्थिति बदल न जाइ। अब बतावा कि मोका का सपना आवा रहा। इहइ एक रास्ता बाटइ पता करइ बरे कि का तू मोका मोरे सपना क सही अरथ बताइ सकत।”

कसदियन कसदी लोग ज्योतिस विद्या क उपयोग कइके व्याख्या बतावइ में माहिर होत रहेन।

10कसदियन राजा क उत्तर देत भए कहेन, “हे राजा धरती पइ कउनो अइसा मनई नहीं जउन अइसा कइ सकइ जइसा आप करइ क आग्रह करत ह। बुद्धिमान मनइयन स या जादूगसन स या कसदियन स कउनो भी महान अउर सवित्साली राजा कबहुँ भी अइसा करइ क नहीं कहेस। 11महाराज, आप उ काम करइ क कहत अहा, जउन संभव नहीं अहइ। बस राजा क ओकरे सपना क बारे में अउर ओकरे फल क बारे में देवता ही बताइ सकत हीं। किन्तु देवता तउ लोगन क बीच नहीं रहतेन।”

12जब राजा इ सुनेस तउ ओका बहोत किरोध आवा अउर उ बाबुल क सबहि बुद्धिमान मनइयन क मरवा डावइ क हुकूम दइ दिहस। 13राजा क आदेस लागू होइ चुका रहेन। सबहीं बुद्धिमान मनइयन क मारा जाब रहा, एह बरे दानियेल अउ ओकर मीतन क भी मरवाइ डावइ बरे ओनकर खोज में राज पुरुस पठइ दीन्ह गएन।

14अर्योक राजा क रच्छकन क नायक रहा। उ बाबुल क बुद्धिमान मनइयन क मार अवइ बरे जात रहा, किन्तु दानियेल ओहसे बातचीत किहस। दानियेल अर्योक स बुद्धिमानी क साथ नम्र होइके बात किहस। 15दानियेल अर्योक स पूछेस, “राजा एतना कठोर दण्ड देइके आग्या काहे दिहस ह?”

एह पइ अर्योक राजा क सपनावाली सारी कहानी कहि सुनाएस, दानियेल ओका समुझ गवा। 16दानियेल जब इ कहानी सुन लिहस तउ उ राजा नबूकदनेस्सर क लगे गवा। दानियेल राजा स बिनती किहस कि उ ओका तनिक समइ अउर देइ। उ राजा स ओकार सपना क अरथ समेत बतावइ क वादा किहस।

17एकरे पाछे दानियेल अपने घर क चल दिहस। उ आपन मीत हनन्याह, मीसाएल अउ अजर्याह क उ सारी बातन कहि सुनाएस। 18दानियेल आपन मीतन स सरग क परमेस्सर स पराथना करइ क कहेस। दानियेल ओनसे कहेस कि उ पचे परमेस्सर स पराथना करई कि उ ओन पइ दयालु होइ अउर इ रहस क समुझइ में ओनकर मदद करइ जेहसे बाबुल क दूसर विवेकी मनइयन क संग दानियेल अउ ओकर मीत भी घाट न उतारि दीन्ह जाई।

19राति क समइ परमेस्सर एक दर्सन में दानियेल क उ रहस समुझाइ दिहस। एह पइ सरग क परमेस्सर क स्तुति करत भए। 20दानियेल कहेस:

“परमेस्सर क नाउँ क सदा प्रसंसा करा। सवित अउ बुद्धिमान ओहमाँ ही होत ह।

21उ ही समइ बुद्धिमान क बदलत ह। उहइ राजा लोगन क हटावत ह अउर उहइ राजा लोगन क नियुक्त करत ह। उहइ बुद्धि देत ह अउर लोग बुद्धिमान बन जात हीं। उहइ लोगन क गियान देत ह अउर लोग गियानी बन जात हीं।

22उ गहिर अउ छुपे रहसस क जानत ह जेका समुझ पाउब कठिन अहइ। प्रकास ओकरे संग रहत ह। तउ उ जानत ह कि अँधियारा में अउ रहसस भरे स्थानन में का अहइ।

23हे मोरे पुरखन क परमेस्सर, मई तोहका धन्यवाद देत हउँ अउ तोहार गुण गावत हउँ। तू ही मोका गियान अउ

बुद्धिमत्ता दिहा। जउन बातन मई पूछे रहे ओकरे बारे में तू मोका बताया। तू हमका राजा क सपना क बारे में बताया।”

दानिय्येल क जरिये राजा क सपन क व्याख्या

24एकरे पाछे दानिय्येल अर्योक क लगे गवा। राजा नबूकदनेस्सर अर्योक क बाबुल क बुद्धिमान मनइयन क हतिया बरे नियुक्त कीन्ह रहा। दानिय्येल अर्योक स कहेस, “बाबुल क बुद्धिमान मनइयन क हतिया जिन करा। मोका राजा क लगे लइ चला, मई ओका ओकर सपना अउ उ सपना क फल बताउब।”

25तउ अर्योक दानिय्येल क हाली ही राजा क लगे लइ गवा। अर्योक राजा स कहेस, “यहूदा क बन्दिन्यन में मई एक अइसा मनई हेर लिहेउँ ह जउन राजा क ओकर सपना क मतलब बताइ सकत ह।”

26तउ राजा दानिय्येल (बेलतसस्सर) स एक सवाल पूछेस, “का तू मोका मोर सपना अउ ओकर अरथ क बारे में बताइ सकत ह?”

27दानिय्येल जवाब दिहस, “हे राजा नबूकदनेस्सर, तू जउन रहसस क बारे में पूछत अहा, ओका तोहका न तउ कउनो बुद्धिमान व्यक्ति न कउनो तान्त्रिक अउर न कउनो भविष्यवक्ता क बताइ सका ह। 28किन्तु सरग में एक परमेस्सर अइसा अहइ जउन भेद भरी बातन क रहसस बतावत ह। परमेस्सर राजा नबूकदनेस्सर क आगे क होइवाला अहइ, इ दर्सावइ बरे सपना दिहस ह। आपन बिछउना में सोते भए तू सपना में जउन बातन लखे रह्या, उ सबइ इ सब अहइ, 29हे राजा। तू अपने बिछउना में सोवत रह्या। तू भविस्स में घटइवाली बातन क बारे में सोचब सुरू किहेस। परमेस्सर लोगन क रहससपूर्ण बातन क बारे में बताइ सकत ह। तउ उ भविस्स में जउन घटइवाला अहइ, उ तोहका दर्साइ दिहस। 30परमेस्सर उ रहसस मोका भी बताइ दिहस ह। अइसा एह बरे नाहीं भवा कि मोरे लगे दूसर लोगन स कउनो जियादा बुद्धि अहइ। बल्कि मोका परमेस्सर इ भेद क एह बरे बताएस ह कि राजा क ओकर सपना क फल पता चल जाइ अउर इ तरह हे राजा, तोहरे मने में जउन बातन आवति अहइ, ओनका तू समझ जा।

31“हे राजा, सपना में तू अपने समन्वा खड़ा एक तु बिसाल मूर्ति लख्या ह, उ मूर्ति बहोत बड़ी रही, उ चमकदार रही अउर प्रभाव स पूरी रही। इ देखइ में डराउनी रही। 32उ मूर्ति क सिर सुद्ध सोना क बना रहा। ओकर छाती अउ सबइ भुजा चाँदी क बनी रहिन। ओकर पेट अउर जाँधन काँसा क बनी रहिन। 33उ मूर्ति क गोड़न लोहा क बनी रहिन। उ मूर्ति क पैर थोड़ा लोहा अउ थोड़ा माटी क बने रहन।

34“जब तू उ मूर्ति कइँती लखत रह्या, तउ तू एक तु चट्टान लख्या जउन कउनो मनई क मेहनत क कटी रहन अउर आइके मूर्ती क लोहे अउर मिट्टी क बनी गोड़न स टकरा गएन। उ चट्टान क कारण ओन मूर्तियन क गोड़ चकनाचूर होइ गएन। 35फुन फउरन ही लोहा, माटी, काँसा, चाँदी अउ सोना सब चूर-चूर होइ गवा अउ उ चूरा गर्मियन क दिनन में खरिहाने क भूसा जइसा होइ गवा। ओन टूकन

क हवा उड़ाइ लइ गइ। हुआँ कछू भी तउ नाहीं बचा। कउनो इ नाहीं कहि सकत रहा कि हुआँ कबहुँ मूर्ति रही भी। फुन उ चट्टान जउन मूर्ति स टकराइ रही, एक बिसाल पर्वत क रूप में बदल गइ अउ सारी धरती पड़ छाड़ गइ।

36“आपका सपना तउ इ रहा। अब हम राजा क इ बतावत अही कि इ सपना क फल का अहइ? 37हे राजा, आप बहोत जियादा महत्वपूर्ण राजा अहइँ। सरग क परमेस्सर तोहका राज दिहे सह। सक्ति दिहेस ह। सामरथ अउ महिमा दिहस ह। 38आप क परमेस्सर नियन्त्रण क सक्ति दिहेस ह अउर आप, लोगन पड़, बन क पसुअन पड़ अउ पंछियन पड़ सासन करत अहा। उ सबइ चाहे कहुँ भी रहत होइँ, ओन सबन पड़ परमेस्सर तोहका सासक ठहराएस ह। हे राजा नबूकदनेस्सर, उ मूर्ति क ऊपर जउन सोने क मूँड़ रहा, उ आप ही अहइँ।

39“आप क पाछे जउन दूसर राजा आई, उहइ उ चाँदी क हीसां अहइ। किन्तु उ राज तोहरे राज क समान बिसाल नाहीं होइ। एकरे पाछे धरती पड़ एक तीसर राज क सासन होइ। उहइ उ काँसे वाला भाग अहइ। 40एकरे पाछे एक चउथा राज आइ, उ राज लोहा क समान मजबूत होइ। जइसे लोहे स वस्तुअन टूटिके चकनाचूर होइ जात ही, वइसे ही चउथा राज दूसर राजन क भंग कइके चकनाचूर करी।

41“तू लखे रह्या कि उ मूर्ति क गोड़न अउर पंजे थोड़े माटी क अउर थोड़े लोहे क बना अहइँ, ओकर मतलब इ अहइ कि उ चउथा राज एक तु बटा भवा राज होइ। एहमें कछू लोहा क सक्ति होइ काहेकि तू माटी मिला लोहा लख्या ह। 42उ मूर्ति क गोड़न क पंजे क अगले हीसा जउन थोड़ा लोहा अउ थोड़ा माटी क बना रहन, एकर अरथ इ अहइ कि उ चउथा राज थोड़ा तउ लोहा क समान सक्तिसाली होइ अउर थोड़ा माटी क समान दुर्बल। 43आप लोहा क माटी स मिला भवा लखे रह्या किन्तु जइसे लोहा अउ माटी पूरी तरह कबहुँ आपुस में नाहीं मिलतेन, उ चउथे राज क लोग वइसे ही मिले जुले होइहीं। किन्तु एक जाति क रूप में उ सबइ लोग आपुस में एक जुट नाहीं होइहीं।

44“चउथे राज क ओन राजा लोगन क समय में ही सरग क परमेस्सर एक दूसर राज क स्थापना कइ देइ। इ राज क कबहुँ अन्त नाहीं होइ अउर इ सदा-सदा बना रही। इ एक अइसा राज होइ जउन कबहुँ कउनो दूसर समूह क लोगन क हाथ में नाहीं जाइ। इ राज ओन दूसर राज क कुचर देइ। इ ओन राजन क बिनास कइ देइ। किन्तु उ राज अपने आप सदा-सदा बना रही।

45“हे राजा नबूकदनेस्सर, आपन पहाड़ स उखड़ी भइ चट्टान तउ लखेउँ। कउनो मनई उ चट्टान क उखाड़ेस नाहीं। उ चट्टान लोहा क, काँसा क, माटी क, चाँदी क अउर सोने क टूका-टूका कइ दिहे रहा। इ प्रकार स महान परमेस्सर आप क उ देखाएस ह जउन भविस्स में होइवाला अहइ। इ सपना सच्चा अहइ अउर आप सपना क इ व्याख्या पड़ भरोसा कइ सकत हीं।” 46एकरे पाछे राजा

नबूकदनेस्सर दानियेल क निहुरिके नमस्कार किहेस। राजा दानियेल क बड़कई किहेस। राजा इ आग्या दिहेस कि दानियेल क सम्मानित करइ बरे एक भेंट अउ सुगन्ध प्रदान कीन्ह जाइ। 47फुन राजा दानियेल स कहेस, “मोका निहचय पूर्वक गियान होइ गवा ह कि तोहार परमेस्सर सब स जियादा महत्वपूर्ण अउ सक्तिसाली परमेस्सर अहइ। उ सबहिं राजा लोगन क परमेस्सर अहइ। उ लोगन क ओन बातन क बारे में बतावत ह, जेनका उ पचे नहीं जान सकतेन। मोका पता अहइ कि इ सच अहइ। काहेकि तू मोका भेद क इ सबइ गुप्त बातन क बताइ सका।”

48एकरे पाछे उ राजा दानियेल क आपन राज्ज में एक बहोत महत्वपूर्ण पद प्रदान किहेस तथा राजा बहोत स बहुमूल्य उपहार भी दानियेल क दिहेस। नबूकदनेस्सर दानियेल क बाबुल क समूचे प्रदेश क सासक नियुक्त कइ दिहेस। अउ उ दानियेल क बाबुल क सबहिं पण्डितन क प्रधान बनाइ दिहेस। 49दानियेल राजा स बिनति किहेस कि उ सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क बाबुल प्रदेश क महत्वपूर्ण हाकिम बनाइ देई। तउ राजा वइसा ही किहेस जइसा दानियेल चाहे रहा। दानियेल खुद ओन महत्वपूर्ण मनइयन में होइ गवा रहा जउन राजा क निअरे रहा करत रहेन।

सोना क प्रतिमा अउ धधकत भट्टी

3 राजा नबूकदनेस्सर सोना क एक ठु प्रतिमा बनवाइ रखी रही। उ प्रतिमा साठ हाथ ऊँची अउ छः हाथ चउड़ी रही। नबूकदनेस्सर उ प्रतिमा क बाबुल प्रदेश क दूरा क मैदान में स्थापित कइ दिहेस। 2अउर फुन राजा राज्ज क राज्जपालन, मुखिया लोगन, अधिपतियन, सलाहकारन, खजांचियन, निआवधीसन, सासकन अउ दूसर सबहिं छेत्र क अधिकारियन क आपन राज्ज में आइके बटुरइ बरे बुलवाइ पठाएस। राजा चाहत रहा कि उ पचे सबहिं लोग प्रतिमा क प्रतिष्ठा महोत्सव में सामिल होई।

3एह बरे पूरा राज्ज स राज्जपाल, नेत, सलाहकार, खजानची, निआवधीस, प्रबंधक अउर बाकी सभी प्रान्तीय अधिकारी समर्पन समारोह में आएन अउ उ प्रतिमा क अगवा खड़े होइ गएन जेका राजा नबूकदनेस्सर स्थापित कराए रहा। 4फुन उ डैंडोरची, जउन राजा क सबइ सूचना क घोसणा प्रसारित करत रहा, ऊँचे अवाजे में कहस, “सुना, सबहिं लोगन, जातियन अउर भासा सुना। तू पचन क जउन करइ क आग्या दीन्ह गइ अहइ, उ इ अहइ, 5“तू पचे जब सबहिं नरसिंहन, बाँसुरियन, सितारन सात तारवाले बाजन वीणा अउ सहनाई तथा दूसर सबहिं प्रकार क बाजन क आवाज सुना, तउ तू पचन्क इ सोना क मूर्ती क जरूर पूजा करइ चाही जउन राजा नबूकदनेस्सर दुआरा स्थापित कीन्ह गवा ह। 6जदि कउनो मनई इ सोना क प्रतिमा क निहुरिके प्रणाम नहीं करी अउ एका नहीं पूजी तउ उ मनई क तुरंतइ धधकत भई भट्टी में झोंक दीन्ह जाइ।”

7तउ, जइसे ही उ पचे नरसिंहन, बाँसुरियन, सितारन, सात तारु वाले बाजन, सहनाइयन अउ दूसर तरह क संगीत बाजन क सुनेन, सभी लोगन, जातियन अउर हर भाखा क

लोग राजा नबूकदनेस्सर क जरिये रखा गवा सोना क उ मूर्ति क निहुरेन अउर पूजा किहेन।

8एकरे पाछे, कछू कसदी लोग राजा क लगे आएन। ओन लोग यहूदियन क विरोध में राजा क कान भरेन। 9राजा नबूकदनेस्सर स उ पचे कहेन, “हे राजा, आप चिरंजीवी हवा। 10हे राजा, आप एक ठु आदेस दिहे रहेन आप कहे रहेन कि हर उ मनई जउन नरसिंहन, बाँसुरियन, सितारन, सात तारुवाले बाजन, सबइ वीणा मसक सहनाइयन अउर दूसर सबहिं तरह क वाद्य-यन्त्रन क ध्वनि क सुनत ह, उ सोना क प्रतिमा क अगवा निहुरिके ओकर पूजा करइ चाही। 11आप इ भी कहे रहेन कि जदि कउनो मनई सोना क प्रतिमा क अगवा नेहुरिके ओकर पूजा नहीं करी तउ ओका कउनो धधकत भट्टी में झोंक दीन्ह जाइ। 12हे राजा, हिआँ कछू अइसे यहूदी अहई जउन आपक आदेस पइ धियान नहीं देतेन। आप ओन यहूदियन क बाबुल प्रदेश में महत्वपूर्ण हाकिम बनाए भवा अहा। अइसे लोगन क नाम अहई -सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो। इ सबइ लोग आप क देवतन क पूजा नहीं करतेन अउ जउन सोना क प्रतिमा क आप स्थापित किहेन ह, उ सबइ न तउ ओकरे अगवा निहुरत हीं अउर ही ओकर पूजा करत हीं।”

13एह पइ नबूकदनेस्सर किरोध में आग-बबूला होइ उठा। उ सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क बोलवाइ पठाएस। तउ ओन लोगन क राजा क समन्वा लावा गवा। 14राजा नबूकदनेस्सर ओन लोगने स कहेस, “सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो। का इ फूर अहइ कि तू मोर देवतन क पूजा नहीं करत्या? अउर का इ भी सच अहइ कि तू मोरे जरिये स्थापित कराइ गइ सोना क प्रतिमा क अगवा न तउ निहुरत अहा, अउर न ही ओकर पूजा करत अहा? 15अब लखा, तू जब नरसिंहन, बाँसुरियन, सितारन, सात तार क बाजन, वीणा, सहनाइयन तथा हर तरह क दूसर वाद्य-यन्त्रन क ध्वनि सुना तउ तोहका सोना क प्रतिमा क अगवा निहुरिके ओकर पूजा करइ चाही। जदि तू मोरे जरिये बनवाइ गइ उ मूर्ति क पूजा करइ क तइयार अहा, तब तउ नीक अहइ किन्तु जदि ओकर पूजा नहीं करत अहा तउ तोहका फउरन धधकत भइ भट्टी में झोंक दीन्ह जाइ। अउर कउनो भी देवता तोहका मोहस बचाइ नहीं सकत्या।”

16सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो उत्तर देत भए राजा स कहेन, “हे नबूकदनेस्सर, हमका तोहका इ बिसय में जवाब देइ क जरूरत नहीं अहइ। 17जदि, हमार परमेस्सर जेकर हम उपासना करित ह ओकर अस्तित्व अहइ तउ उ इ बरत भइ भट्टी स हमका बचाइ लेइ में समर्थ अहइ। तउ राजा, उ हमका मोरी ताकत स बचाइ लेइ। 18किन्तु राजा, हम इ चाहित ह कि तू एतना जान ल्या कि जदि परमेस्सर हमार रच्छा न भी करइ तउ भी हम तोहरे देवतन क सेवा स इन्कार करित ह। सोना क जउन प्रतिमा तू स्थापित कराया ह हम ओकर पूजा नहीं करिब।”

19एह पइ तउ नबूकदनेस्सर किरोध स भइक उठा। उ सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो कईंती घिना स लखा। उ आग्या दिहेस की जेतना उ तपा करत ह, ओका ओहसे सात गुणा जियादा दहकावा जाइ। 20एकरे पाछे नबूकदनेस्सर

आपन सेना क कछू बहोत मजबूत फउजियन क आग्या दिहेस कि उ पचे सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क बाँध लेई। राजा ओन फउजियन क आग्या दिहेस कि उ पचे सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क धधकत भट्ठी में झोकं देई। 21तउ सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क बाँध दीन्ह गवा अउ फुन धधकत भट्ठी में धकेल दीन्ह गवा। उ पचे ओकर कमीज़न, पतलूनन अउ टोप तथा दूसर ओढ़नन पहिर रखे रहेन। 22जउनो समइ राजा इ आग्या दिहे रह्या उ समइ उ बहोत कोहान रहा, एह बरे उ फउरन ही भट्ठी क बहोत तपाइ लिहस। आगी एतना जियादा भड़कत रही कि ओकर लपटन में स उ सबइ सक्तिसाली फउजी जर गएन, जब उ पचे सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क भट्ठी में ढकेले रहा। 23सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो आगी में भहराइ गए रहेन। ओनका बहोत कसिके बाँधा भवा रहा।

24एह पइ राजा नबूकदनेस्सर उछरिके आपन गोड़न, पइ खड़ा होइ गवा। ओका बहोत अचरज होत रहा। उ आपन मंत्रियन स पूछेस, “इ ठीक अहइ न कि हम तउ बस तीन मनइयन क बाँधवाए रहे अउर आगी में ओनहीं तीन क डलवाए रहे।”

ओकर मंत्रियन जवाब दिहन, “हाँ, महाराज।”

25राजा बोला, “लखा, मोका तउ आगी क भीतरे इघर-उघर घुमत भए चार तु मनई देखाई देत अहई। उ सबइ बंधे भए नाहीं अहई अउर आगी ओनका कछू नाहीं बिगाड़ बिगाड़ेस ह। लखा, उ चउथा मनई देवता क पूत जइसा देखाई देत अहइ।”

26एकरे पाछे नबूकदनेस्सर उ बरत भइ भट्ठी क मुँह पइ गवा। उ जोर स गोहराइके कहेस, “सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो, बाहेर आवा। सर्वोच्च परमेस्सर क सेवको बाहेर आवा।”

तउ सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो आगी स बाहेर निकरि आएन। 27तब उ पचे बाहेर आएन तउ प्रान्त क राजपालन, हाकिमन, अधिपतियन अउ राजा क मंत्रियन ओनके चारिहूँ तरफ भीड़ लगाइ दिहन। उ पचे देख पावत रहेन कि उ आगी सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क छुआ तलक नाहीं अहइ। ओनकर तन तनिकउ भी नाहीं जरा रहेन। ओनकर बार झुलसा तलक नाहीं रहेन। ओनकर ओढ़नन क आँच तलक नाहीं आई रहिन। ओनकर तन स अइसी गंध तलक नाहीं निकरत रही जइसे उ पचे आगी क आस-पास भी गवा होई।

28फुन नबूकदनेस्सर कहेस, “सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क परमेस्सर क स्तुति करा। ओनकर परमेस्सर आपन सरगदूत क पठइके, आपन सेवकन क आगी स रच्छा किहेस ह। एन तीनहूँ पूरखन क आपन परमेस्सर में आस्था रही। इ सबइ मोरे आदेस क मानइ स मना कइ दिहेन अउर दूसर कउनो देवता क सेवा या पूजा करइ क बजाय उ पचे मरब कबूल किहेन। 29तउ आजु स मई इ नेम बनावत हउँ: कउनो भी लोगन जातियन अउर भासा बोलइवाला कउनो मनई जदि सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क परमेस्सर क विरोध में कछू कही तउ ओकर टूकन-टूकन कइ दीन्ह जइहीं अउ ओकर घर क उ समइ तलक तोड़ा-फोड़ा जाइ

जब तलक उ मलवा अउ राखी क ढेर मात्र न रहि जाइ। कउनो भी दूसर देवता आपन लोगन क इ तरह नाहीं बचाइ सकता।” 30एकरे पाछे राजा सद्रक, मेसक अउ अबेदनगो क बाबुल क प्रदेस में अउर जियादा महत्वपूर्ण पद प्रदान कइ दिहन।

एक तु बृच्छ क बारे में नबूकदनेस्सर क सपना

4 राजा नबूकदनेस्सर सबइ लोगन, जाति अउर भाखा क, जउन सारी दुनिया में बसे भए रहेन, इ पत्र पठएस तू सबइ क अधिक सात्ति मिली।

2सर्वोच्च परमेस्सर मोर संग जउन अचरज भरी अद्भूत बातन किहेस ह, ओकरे बारे में तोहका बतावत भए मोका बहोत खुसी अहइ।

3ओकरे कार्य केतैना अद्भुत अहइ। ओकरे चमत्कार केतैना सक्तिसाली अहइ। परमेस्सर क राज सदा टिका रहत ह; परमेस्सर क सासन पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहत ह।

4मई, नबूकदनेस्सर, आपन महल में रहेउँ। मई प्रसन्न अउ सफल रहेउँ। 5मई एक सपना लखेउँ जउन मोका डेराइ दिहेस। मई आपन बिछउना में सोवत रहेउँ। मई तस्वीर अउर दर्सनन क लखेउँ। जउन कछू मई लखे रहेउँ उ मोका बहोत डेराइ दिहेस। 6तउ मई इ आग्या दिहेउँ कि बाबुल क सबहि बुद्धिमान लोगन क मोरे लगे, लिआवा जाइ ताकि उ पचे मोका सपन क फल बतावई। 7जब जादगर तान्त्रिक, कसदी अउर भविष्यवक्ता मोरे लगे आबई तउ मई ओनका आपन सपना क बारे में बताएउँ। किन्तु उ सबइ लोग मोका मोरे सपन क अर्थ नाहीं बताइ पाएन। 8अंत में दानियेल मोरे लगे आवा (मई आपन देवता क सम्मानित करइ बरे दानियेल क बेलेतसस्सर नाउँ दिहे रहेउँ। पवितर देवतन क आतिमा क ओहमाँ निवास अहइ।) दानियेल क मई आपन सपन कहि सुनाएउँ। 9मई ओहसे कहेउँ,

“हे बेलेतसस्सर, तू सबहि तान्त्रिकन में सब स बड़का अहा। मोका पता अहइ कि तोहमाँ पवितर देवतन क आतिमा बास करत अहइ। मई जानत हउँ कि कउनो भी रहस क समुझब तोहरे बरे कठिन नाहीं अहइ। मई जउन सपना लखे रहेउँ, उ इ अहइ। तू मोका एकर अरथ समुझावा। 10जब मई आपन बिछउना में ओलरा भवा रहेउँ तउ मई दिव्य दर्सन लखे रहेउँ। मई लखेउँ कि मोरे समन्वा धरती क बीचउ-बीच एक बृच्छ खड़ा अहइ। उ बृच्छ बहोत लम्बा अहइ। 11बृच्छ बड़ा होत भवा एक बिसाल मजबूत बृच्छ बन गवा। बृच्छ क चोटी अकास छुअइ लाग। उ बृच्छ क धरती पइ कहुँ स भी लखा जाइ सकत रहा। 12बृच्छ क पातियन सुन्नर रहिन। बृच्छ पइ बहोत नीक फल बहोतयात में लगे रहेन अउर उ बृच्छ पइ हर कउनो क लिए भरपूर खाइ क रहा। जंगली जनावर बृच्छ क नीचे आसरा पाए भए रहेन अउर बृच्छ क डारन पइ चिरइयन क बसेरा रहा। हर पसु पच्छी उ बृच्छ स ही भोजन पावत रहा।

13“अपने बिछउना पइ ओलरे-ओलरे दर्सन में मई ओन वस्तुअन क लखत रहेउँ अउर तबहिं एक पवितर सरगदूत क मई सरग स नीचे उतरत भए लखेउँ। 14उ बड़े ऊँचे सुर में बोला। उ कहेस, ‘बृच्छ क कांट लोकावा। एकर टहनियन क काट डाला। एकर पातियन क नोंच डावा। एकर फलन क चारिहुँ ओर बिखेर द्या। इ बृच्छ क नीचे आसरा पाए भए पसु कहूँ दूर पराइ जाई। एकर आसन पइ बसेरा किए भए पंछी कहूँ उड़ जाई।

15“किन्तु एकर तना अउर एकर जड़न क धरती में रहइ द्या। एकरे चारिहुँ ओर लोहा अउ काँसे क एक बंधेज बाँध द्या। अपने आस-पास उगी घास क संग एकर तना अउर एकर जड़न धरती में रहिहीं। जंगली पसुअन अउ पेड़ पौधन क बीच इ खेतन में रही। ओस स उ नम होइ जाइ। 16उ जियादा समइ तलक मनई क तरह नाहीं सोची। ओकर मन पसु क मन जइसा होइ जाइ। ओकर अइसा ही रहत भए सात ऋतु चक्र (बरिस) बीत जाई।’

17“एक पवितर सरगदूत इ दण्ड क घोसणा किहे रहा ताकि धरती क सबहिं लोगन क इ पता चल जाइ कि मनइयन क राजन क ऊपर परम प्रधान परमेस्सर सासन करत ह। परमेस्सर जेका भी चाहत ह। एन राजन क दइ देत ह अउर परमेस्सर ओन राजन पइ सासन करइ बरे विनम्र मनइयन क चुनत ह।

18“बस मई (राजा नबूकदनेस्सर) सपना में इहइ लखेउँ ह। अब हे बेलतसस्सर। तू मोका इ बतावा कि इ सपना क अरथ का अहइ? मोरे राज क कउनो भी बुद्धिमान मनई मोका इ सपना क फल नाहीं बताइ पावत अहइ। किन्तु हे बेलतसस्सर, तू मोरे इ सपना क व्याख्या कइ सकत ह काहेकि तोहमों पवितर परमेस्सर क आतिमा निवास करत अहइ।”

19तब दानियेल (जेकर नाउँ बेलतसस्सर भी रहा) थोड़ी देर बरे एक दम चुप होइ गवा। जिन बातन क उ सोचत रहा, उ सबइ ओका बियाकुल किहे डावत रहिन। तउ राजा ओहसे कहेस, “हे बेलतसस्सर, तू उ सपना या उ सपना क फल स भय भीत जिन हवा।”

एह पइ बेलतसस्सर राजा क उत्तर दिहेस, “हे मोर सुआमी, कास इ सपना तोहरे दुस्मनन चइ पड़इ अउर एकर फल, जउन तोहरे विरोधी अहइँ, ओनका मिलइ।” 20तू आपन सपना में एक बृच्छ लखे रहेउँ। उ बृच्छ बड़ा भवा अउर मजबूत बन गवा। बृच्छ क चोटी आसमान छुअत रही। धरती में हर कहूँ स उ बृच्छ देखाई देत रहा। 21ओकर पातियन सुन्नर रहित अउर ओह पइ बहोतयात में फल लगे रहेन। ओन फलन स हर कउनो क पर्याप्त भोजन मिलत रहा। जंगली पसुअन क तउ उ घर ही रहा अउर ओकर डारन पइ चिरइयन बसेरा किया भए रहेन। तू सपना में अइसा बृच्छ लखे रह्या। 22हे राजा, उ बृच्छ आप ही अहइँ। आप महान अउर सक्तिसाली बन चुका अहइँ। आप उ ऊँच बृच्छ क समान अहइँ जउन अकास छुइ लिहेस ह

अउर आप क सक्ति धरती क सुदूर भागन तलक पहुँची भई अहइँ।

23“हे राजा, आप एक पवितर सरगदूत क अकासे स नीचे उतरत लखे रह्या। सरगदूत कहे रहा बृच्छ क काट डावा अउर ओका नस्त करा। बृच्छ क तना पइ लोहा अउ काँसे क बंधज डाइ द्या अउर एकर तना अउ जड़न क धरती में ही छोड़ द्या। खेत में घास क बीच एका रहइ द्या। ओस स ही इ नमी लेत रही। उ कउनो जंगली पसु क रूप में रहा करी। एकर रहइ हाल में सात ऋतु-चक्र बीत जइहीं।

24“हे राजा, आपक सपन क फल इहइ अहइ। सर्वोच्च परमेस्सर मोर सुआमी राजा क बरे एन बातन क घटइ क आदेस दिहस ह। 25हे राजा नबूकदनेस्सर, प्रजा स दूर चला जाइ क बरे आप क मजबूर कीन्ह जाइ। जंगली पसुअन क बीच आप क रहइ क होइ। मवेसियन क तरह आप घास स पेट भरिहीं अउर ओस स भिगिहीं। सात ऋतु चक्र बीत जइहीं अउर फुन ओकरे बाद तू इ स्वीकार करब्या कि सर्वोच्च परमेस्सर मनइयन क साम्राज्यन पइ सासन करत ह अउर उ जेका भी चाहत ह, ओका राज दइ देत ह।

26“बृच्छ क तना अउ ओकर जड़न क धरती में छोड़ देइ क आदेस क अरथ इ अहइ कि आप क साम्राज्य आप क वापस मिलि जाइ। किन्तु इ उहइ समइ होइ जब तू इ जान जाब्या कि तोहरे राज पइ सर्वोच्च परमेस्सर क ही सासन अहइ। 27एह बरे हे राज, आप कृपा कइके मोर सलाह माना। मई आप क इ सलाह देत हउँ कि आप पाप करब तजि देई अउर जउन उचित अहइ, उहइ करई। कुकरमन क त्याग कइ देई। गरीबन पइ दयालु होई। तबहिं आप सफल बना रहि सकिहीं।”

28इ सबहिं बातन राजा नबूकदनेस्सर क संग घटिन। 29इ सपना क बारह महीना बाद जब राजा नबूकदनेस्सर बाबुल में आपन महल क छत पइ घूमत समइ, 30तउ उ आपन आप स किहा, “उ मई हउँ जउन कि इ महान बाबुल क निर्माण किहेउँ ह। इ महल मोर अहइ। मई आपन सक्ति स इ बिसाल नगर क निर्माण किहेउँ ह। इ ठउर क निर्माण मई इ देखाइ बरे किहेउँ ह कि मई केतना खुस हउँ।”

31इ सबइ सब्द अबहिं ओकरे मुँह में ही रहेन कि एक अकासवाणी भई। अकासवाणी कहेस, “राजा नबूकदनेस्सर, तोहरे संग इ सबइ बातन घटिहीं। राजा क रूप में तोहसे तोहार सक्ति छोर लीन्ह गइ अहइ। 32तोहका आपन लोगन स दूर जाब होइ। जंगली पसुअन क संग तोहार निवास होइ। तू ढोरन क तरह घास खाब्या। एहसे पहिले कि तू सबक सीखा कि मनई क राजन पइ सर्वोच्च परमेस्सर सासन करत ह अउर सर्वोच्च उ जेका चाहत ह, ओका राज दइ देत ह सात ऋतु-चक्र बीत जइहीं।”

33फुन फउरन ही इ सबइ बातन घट गइन। नबूकदनेस्सर क लोगन स दूर जाइ बरे मजबूर कीन्ह गवा। उ गाइयन क तरह घास खाब सुरू कइ दिहस। उ ओस में भीगा। कउनो उकाब क पंखन क तरह ओकर बार बढ़ गएन अउर ओकर नाखून अइसे बढ़ गएन जइसे कउनो पंछी क पंजन क नाखून होत हीं।

34फुन उ समइ क अंत में मई, नबूकदनेस्सर ऊपर सरग क कईती लेखा अउर मोर सोचइ समुझइ क बुद्धि फिर स ठीक होइ गवा। तउ मई सर्वोच्च परमेस्सर क स्तुति किहेउँ, जउन सदा अमर अहइ, मई ओका आदर प्रदान किहेउँ अउर ओका गुनगान किहेउँ।

परमेस्सर सासन हमेसा करत ह। ओकर राज् पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहत ह। 35इ धरती क सबइ लोग महत्वपूर्ण नाहीं अहई। परमेस्सर सरग क सक्तियन अउर धरती क लोगन क संग जउन चाहत ह उहइ करत ह। उ जउन करइ चाहत ह ओका उ करइ स कउनो भी नाहीं रोक सकत ह। ओकर ससक्त हाथ जउन कछू उ करत ह ओह पइ कउनो नाहीं सवाल करत ह।

36तउ, उ औसर पइ परमेस्सर मोका मोर बुद्धि फुन दइ दिहेस अउर उ एक राजा क रूप में मोर बड़ा मान, सम्मान अउ सक्ति भी वापस लउटाइ दिहेस। मोर मंत्री अउर मोर राजकीय लोग फुन मोरे लगे आवइ लागेन। मई फुन स राजा बन गएउँ। मई पहिले स भी जियादा महान अउ सक्तिसाली होइ गवा रहेउँ। 37लखा, अब मई, नबूकदनेस्सर सरग क राजा क स्तुति करत हउँ तथा ओकर उपासना करत हउँ, ओका आदर देत हउँ अउर ओकरे गुनगान करत हउँ। उ जउन कछू करत ह, ठीक करत ह। उ हमेसा निआव स पूर्ण अहइ। ओहमाँ अहंकारी लोगन क विनम्र बनाइ देइ क छमता अहइ।

देवार पइ अभिलेख

5 राजा बेलसस्सर आपन एक हजार अधिकारियन क एक बड़की दावत दिहेस। राजा ओकरे संग दाखरस पिअत रहा। 2राजा बेलसस्सर दाखरस पिअत भए आपन सेवकन क सोना अउ चाँदी क पियाला लिआवइ क कहेस। इ सबइ उ सबइ पियालन रहेन जेनका ओकर पिता नबूकदनेस्सर यरूसलेम क मन्दिर स लिहे रहा। राजा बेलसस्सर चाहत रहा कि ओकर साही लोग, ओकर मेहररूअन अउ ओकर उप पत्नियन इन पियालन स दाखरस पिअइ। 3तउ सोना क उ सबइ पियालन लिआवा गएन जेनका यरूसलेम में परमेस्सर क मन्दिर स उठावा गवा। फुन राजा अउ ओकर अधिकारियन, ओकर रानियन तथा ओकर उप पत्नियन, ओन पियालन स दाखरस पिया किहेन। 4दाखरस पिअत भए उ पचे आपन देवतन क मूरतियन क स्तुति करत रहेन। उ पचे ओन देवतन क स्तुति किहेन जउन देवता सोना, चाँदी, काँसा, लोहा, काठ अउ पाथर क मूरति पात्र रहेन।

5उहइ समइ एकाएक कउनो मनई क एक हाथ परगट भवा अउ देवार पइ लिखइ लाग। ओकर अँगुरियन देवार क लेप क कुरेदत भइ सब्द लिखइ लागिन। देवार क लगे राजा क महल में उ हाथ देवार पइ लिखेस। हाथ जब लिखत रहा तउ राजा ओका लखत रहा।

6राजा बेलसस्सर बहोत भयभीत होइ उठा। डर स ओकर मुँह पिअर पइ गवा अउर ओकर घुटनन इ तरह काँपइ लागेन कि उ सबइ आपुस में टकरात रहेन। ओकर गोड़

एतना बलहीन होइ गएन कि उ खड़ा भी नाहीं रहि पावत रहा। 7राजा तान्त्रिकन अउ कसदियन क अपने लगे बोलवाएस अउर ओनसे कहेस, “मोका जउन कउनो भी इ लिखावट क पढ़कर बताइ अउर मोका ओकर अरथ समुझाइ देइ, मई ओका पुरस्कार देब। उ मनई क मई बैगनी पोसाक भेंट करब। मई ओकरे गले में सोना क हार पहिराउब अउर मई ओका आपन राज् क तीसर सबसे बड़ा सासक बनाइ देब।”

8तउ राजा क सबहि बुद्धिमान मनई हुवाँ आइ गएन किन्तु उ सबइ उ लिखावट क नाहीं पढ़ि सकेन। उ पचे समुझ ही नाहीं सकेन कि ओकर अरथ का अहई। 9राजा बेलसस्सर क हाकिम चक्कर में पड़े भए रहेन अउर राजा तउ अउर भी जियादा भयभीत अउर चिंतित रहा। ओकर मुँह डर स पीला पड़ा भवा रहा।

10तबहि जहाँ उ दावत चलत रही, हुवाँ राजा क महतारी आइ। उ राजा अउर ओकर राजकीय अधिकारियन क आवाजन सुन रिहे रहिन, उ कहेस, “हे राजा, चिरंजीव रहा। डेरा जिन। तू आपन मुँह क डर स एतना पीला जिन पड़इ द्या। 11लखा, तोहरे राज् में एक अइसा मनई अहइ जेहमाँ पवित्र देवतन क आत्मा बसत ह। तोहरे बाप क दिनन में इ मनई इ दसयि रहा कि ओकरे लगे देवतन क बुद्धि क नाई बुद्धि अउर समुझ अहइ। तोहार पिता नबूकदनेस्सर इ मनई क सबहि बुद्धिमान मनइयन पइ, तान्त्रिकन अउ कसदियन पइ मुखिया नियुक्त किहे रहा। 12मई जउन मनई क बारे में बातन करत हउँ ओकर नाउँ दानियेल अहइ। किन्तु राजा ओका बेलतसस्सर क नाउँ दइ दिहे रहा। बेलतसस्सर बहुत चुस्त अहइ अउर बहुत स बातन जानत ह। उ सपनन क व्याख्या कइ सकत ह। पहेलियन क समझाइ सकत ह। अउर कठिन स कठिन हलन क सुलझाइ सकत ह। तू दानियेल क बोलवा। देवारे पइ जउन लिखा बाटइ, ओकर अरथ तोहका उहइ बताई।”

13तउ उ सबइ दानियेल क राजा क लगे लइ आएन। राजा दानियेल स कहेस, “का तोहार नाउँ दानियेल अहइ? मोर पिता महाराज यहूदा स जिन लोगन क बंदी बनाइके लिआए रहेन, का तू ओनमाँ स एक अहा? 14मई सुनेउँ ह, कि देवता क आत्मा क तोहमाँ निवास अहइ अउर मई इ भी जानेउँ ह कि तोहमाँ महान अन्तदृष्टि अहइ। तू बहोत चुस्त अउ बुद्धिमान अहा।

15“बुद्धिमान मनई अउ तान्त्रिकन क इ देवार क लिखावट क समुझावइ बरे मोरे लगे लिआवा गवा। मई चाहत रहेउँ कि उ सबइ लोग उ लिखावट क अरथ बतावई। किन्तु देवार पइ लिखी इ लिखावट क व्याख्या उ पचे मोका नाहीं दइ पाएन। 16मई तोहरे बारे में सुनेउँ ह कि तू बातन क अर्थ क व्याख्या कइ सकत ह अउर तू अत्यन्त कठिन समस्यन क उत्तर भी ढूँढ सकत ह। जदि देवार क इ लिखावट क तू पढ़ द्या अउर एकर अरथ तू मोका समुझाइ द्या तउ मई तोहका उ सबइ चिजियन देब। मई तोहका बैगनी रंग क पोसाक प्रदान करब, तोहरे गले में सोना क हार पहिराउब। फुन तउ तू इ राज् क तीसर सब स बड़का सासक बन जाब्या।”

17एकरे पाछे दानियेल राजा क उत्तर देत भए कहैस, “हे राजा बेलसस्सर, तू आपन उपहार अपने लगे रखा, अथवा चाहा तउ ओनका कउनो अउर क दइ द्या। मई तोहका वइसे ही देवार क लिखावट पढ़ देब अउर ओकर अरथ का अहइ, इ तोहका समुझाइ देब।

18“हे राजा, सर्वोच्च परमेस्सर तोहार पिता नबूकदनेस्सर क एक महान सक्तिसाली राजा बनाए रहेउँ। परमेस्सर ओनका बहोत अधिक स अधिक महत्वपूर्ण बनाए रहा। 19सबइ रास्ट्र नबूकदनेस्सर स डरा करत रहेन काहेकि सर्वोच्च परमेस्सर ओक एक बहोत बड़का राजा बनाए रहा। जदि नबूकदनेस्सर कउनो क मार डावइ चाहत तउ ओका मार दीन्ह जात रहा अउर जदि उ चाहत कि कउनो मनई जिअत रहइ तउ ओका जिअत रहइ दीन्ह जात रहा। ओनका जेका उ उन्नती देइ चाहत रहा तउ ओका उन्नती देइ दीन्ह जात रहा। ओनका जेका उ विनम्र बनाइ चाहत रहा तउ ओका विनम्र बनाइ दीन्ह जात रहा।

20“किन्तु नबूकदनेस्सर क अभिमान होइ गवा अउर उ हठीला बन गवा। तउ परमेस्सर क जरिये ओहसे ओकर सक्ति छोर लीन्ह गइ। ओका ओकर राज सिंहासन स उतार फेंका गवा अउ ओका महिमा विहीन बनाइ दीन्ह गवा। 21एकर पाछे लोगन स दूर पराइ जाइ क बरे नबूकदनेस्सर क मजबूर कीन्ह गवा। ओकर सोचइ समुझइ क बुद्धि कउनो पसु क बुद्धि जइसी होइ गइ। उ जंगली गदहन क बीच रहइ लगा अउर डोरन क तरह घास खात रहा। उ ओस में भीगा। जब तलक ओका सबक नहीं मिल गवा, ओकरे संग अइसा ही होत गवा। फिन ओका इ गियान होइ गवा कि मनई क राज पइ सर्वोच्च परमेस्सर क ही सासन अहइ। अउर साम्राज्यन क ऊपर सासन करइ बरे उ जउन कउनो क भी चाहत ह, नियुक्त कइ देत ह।

22“किन्तु हे बेलसस्सर, तू तउ एन बातन क जानत ही अहा। तू नबूकदनेस्सर क पूत अहा किन्तु फुन भी तु अपने आप क विनम्र नहीं बनाया। 23नहीं तू विनम्र तउ नहीं भया अउ उल्टे सरग क सुआमी क खिलाफ होइ गया। तू ओकरे मन्दिर क पात्रन अउर पिआलन क अपने लगे लिआवइ क आग्या दिहा अउर फुन तू, तोहरे साही हाकिमन, तोहार मेहरून, तोहार उप पत्नियन ओन पिआलन में दाखरस पिएन। तू चाँदी, सोना, काँसा, लोहा, काठ अउर पाथर क देवतन क गुण गाया। उ पचे फुरइ क देवता नहीं अहइँ। उ पचे लख नहीं सकतेन, सुन नहीं सकतेन तथा उ पचे कछू समुझ भी नहीं सकतेन। उ पचे जानइ क सामर्थ नहीं अहइ कि तू ओनका स्तुति करत ह। तू उ परमेस्सर क आदर नहीं दिहा, जेकर जिन्गी या जउन कछू भी तू करत अहा, ओह पइ अधिकार अहइ। 24तउ एह बरे, परमेस्सर उ हाथे क पठएस जउन देवार पइ लिखेस। 25देवार पइ जउन सब्द लिखा गवा अहइँ, उ सबइ इ सबइ अहइँ:

मने, मने तकेल, ऊपसीन।

26“एन सब्दन क अरथ अहइ, मने: अर्थात् परमेस्सर तोहरे सासन क दिन गन लिहैस ह अउर उ ओकरे अन्त लिआएस ह।

27तकेल: अर्थात् तराजू पइ तोहका तौल लीन्ह गवा ह अउर तू पूरा नहीं उतरा ह।

28ऊपसीन: अर्थात् तोहसे तोहार राज छोरा जात अहइ अउर ओकर बँटवारा होत अहइ। इ राज मादियन अउ फारसिदन क लोगन क दइ दीन्ह जाइ।”

29एकरे पाछे बेलसस्सर आग्या दिहैस कि दानियेल क बैंगनी बेसभूसा पहिराइ जाइ। ओकरे गले में सोने क हार पहिराइ दीन्ह जाइ अउर इ घोसणा कइ दीन्ह गइ कि उ राज में तीसरा सबसे बड़कवा सासक होइ। 30उहइ रात, बेलसस्सर, बाबुल क प्रजा क राजा बध कइ दीन्ह गवा। 31मादे क रहइवाला एक मनई जेकर नाउँ दारा रहा अउर जेकर आयु कउनो बासठ बरिस क रही, हुवाँ क नवा राजा बना।

दानियेल अउ सिंह

6 दारा राज पइ हुकुमत करइ बरे ओकर मदद बरे एक सौ बीस प्रांतीय अधिकारियन क नियुक्त करइ क निहचय किहा। 2अउर एकरे बरे उ एक सौ बीस प्रांत-अधिपतियन क ऊपर हुकुमत करइ बरे तीन ठु मनइयन क अधिकारी नियुक्त कइ दिहस। इ तीनहुँ देख-रेख करइवालन में एक रहा दानियेल। एन तीन मनइयन क नियुक्ति राजा एह बरे किहे रहा कि कउनो ओकरे संग छल न कइ पावइ अउर ओकर राज क कउनो भी हानि न होइ। 3दानियेल इ कइ देखाएस कि उ दूसर पर्यवेच्छकन स जियादा उत्तम अहइ। दानियेल इ काम आपन उत्तम मानिसक जागतन अउर महान अन्तर्दृष्टि क कारण सम्पन्न कइ सकेस। राजा दानियेल स एतना जियादा प्रभावित भवा कि उ दानियेल क सारी हुकुमत क हाकिम बनावइ क सोचेस। 4किन्तु जब दूसर पर्यवेच्छकन अउ प्रांत अधिपतियन एकरे बारे में सुनेन तउ ओनका दानियेल स जलन होइ लाग। उ पचे ओका कोसइ क बरे कारण ढूँढइ क जतन करइ लागेन। किन्तु फुन भी उ पचे ओकरे काम में कउनो दोख या कउनो भ्रष्ट नहीं ढूँढ पाएन। तउ उ पचे ओह पइ कउनो गलत काम करइ क दोख नहीं लगाइ सकेन। काहेकि दानियेल बहोत ईमानदार अउ भरोसेमन्द मनई रहा। उ पचे ओहमाँ कउनो दोख नहीं ढूँढ पाएन।

5आखिरकार ओन लोग कहें, “दानियेल पइ कउनो बुरा काम करइ क दोख लगावइ क वजह हम कबहुँ नहीं ढूँढ पाउब। एह बरे हमका सिकाइत क बरे कउनो अइसी बात ढूँढइ चाही जउन ओकर परमेस्सर क नेमन स सम्बन्ध रखत होइ।”

6तउ उ पचे दुइनउँ पर्यवेच्छक अउर उ सबइ प्रांत-अधिपति टोली बनाइके राजा क लगे गएन। उ पचे कहें, “हे राजा दारा, तू अमर रहा। 7हम सबहिँ पर्यवेच्छक, हाकिम, प्रांत - अधिपति, मंत्री अउर राजपाल एक बात पइ सहमत अहइ कि राजा क इ नेम बनाइ देइ चाही अउर हर मनई क इ नेम क पालन करइ चाही। उ नेम इ अहइँ, ‘जदि अगले तीस दिनन तलक कउनो भी मनई, आपक तजिके कउनो अउर देवता या मनई क पराथना करइ तउ उ

मनई क सेरन क माँद में डाइ दीन्ह जाइ। 8अब हे राजा! जउने कागज पइ नेम लिखा अहइ, तू ओह पइ हस्ताच्छर कइ दया। इ तरह स इ नेम कबहुँ बदला नहीं जाइ सकी। काहेकि मीडियन अउ फारसियन क नेम न तउ बदले जाइ सकत हीं।” 9तउ राजा दारा इ नेम बनाइके ओह पइ हस्ताच्छर कइ दिहेस।

10हर दिन तीन दाई दानियेल अपने घुटनन क बल निहुरिके आपन परमेस्सर क पराथना करत रहेन अउर आपन परमेस्सर क सुकरिया अदा किहेन। दानियेल जब इ नवे नेम क बारे में सुनेस तउ उ अपने घर चला गवा। दानियेल आपन मकान क छत क ऊपर, आपन कमरा में चला गवा। दानियेल ओन खिड़कियन क लगे गवा जउन यरूसलेम क तरफ खुलत रहिन। फिन उ आपन घुटनन क बल निहुरा अउर जइसे सदा किया करत रहा, उ वइसे ही पराथना किहेस।

11फिन उ सबइ लोग झुण्ड बनाइके दानियेल क हिऔं जाइ पहुँचेन। हुवाँ उ पचे दानियेल क पराथना करत अउ परमेस्सर स दया माँगत पाएन। 12बस फुन का रहा। उ सबइ लोग राजा क लगे पहुँचेन अउर उ पचे राजा स उ नेम क बारे में बात किहेन जउन उ बनाए रहा। उ पचे कहेन, “हे राजा दारा, आप एक नेम बनाए रहेन। जेकरे अनुसार अगले तीस दिनन तलक जदि कउनो मनई कउनो देवता स या तोहरे अलावा कउनो मनई स पराथना करत ह तउ, हे राजा, ओका सेरन क माँद में फेंकवाइ दीन्ह जाइ। बतावई का आप इ नेम पइ हस्ताच्छर नहीं किहे रहेन?”

राजा जवाब दिहेस, “हाँ, मई उ नेम पइ हस्ताच्छर किहे रहेउँ अउर मादियन अउ फारसियन क नेम अटल होत हीं। न तउ उ सबइ बदले जाइ सकत हीं, अउर न ही मिटावा, जाइ सकत हीं।”

13एह पइ ओन राजा स कहेन, “दानियेल नाउँ क उ मनई आप क बात पइ धियान नहीं देत अहइ। दानियेल यहूदा क बन्दियन में स एक अहइ। जउने नेम पइ आप हस्ताच्छर किहेन ह, उ ओह पइ धियान नहीं देत अहइ। दानियेल अबहुँ भी हर दिन तीन दाई अपने परमेस्सर क पराथना करत ह।”

14राजा जब इ सुनेस तउ उ बहोत दुःखी अउ बियाकुल होइ उठा। राजा दानियेल क बचावइ चाहत रहा। एह बरे ओका बचावइ क कउनो उपाय सोचत सोचत राजा सारा दिन बिताइ दिहेस अउर साम होइ गइ। 15एकरे बाद उ सबइ लोग एक झुण्ड बनाइके राजा क लगे पहुँचेन। उ पचे राजा स कहेन, “हे राजा, मादियन अउ फारसियन क ब्यवस्था क अनुसार या हुकूम पइ राजा हस्ताच्छर कइ देइ, उ न तउ कबहुँ बदला जाइ सकत ह अउर न ही कबहुँ मिटावा जाइ सकत ह।”

16तउ राजा दारा आदेस दइ दिहेस। उ सबइ लोग दानियेल क धइ लाएन अउर ओका सेरन क माँद में लोकाइ दिहेन। राजा दानियेल स कहेस, “मोका आसा अहइ कि तू जउन परमेस्सर क हमेसा उपासना करत ह, उ तोहार रच्छा करी।” 17एक बड़ा सा पाथर लिआवा गवा अउर ओका सेरन क माँद क दुआर पइ भेइ दीन्ह गवा।

फुन राजा आपन अँगूठी लिहेस अउर उ पाथर पइ आपन मुहर लगाइ दिहेस। साथ ही उ आपन हाकिमन क अँगूठियन क मुहरन भी उ पाथर पइ लगाइ दिहेस। एकर इ अभिप्राय रहा कि उ पाथर क कउनो भी हटाइ नहीं सकत अउर सेरन क उ माँद स दानियेल क बाहेर नहीं लाइ सकत रहा। 18एकरे पाछे राजा दारा आपन महल क वापस चला गवा। उ पूरी रात उपवास किहेस। उ नहीं चाहत रहा कि कउनो ओकरे लगे आवइ अउर ओकर मन बहलावइ। राजा सारी रात सोइ नहीं पाएस।

19दूसरे दिन भिन्सारे जइसे ही सूज रोसनी फइलइ लाग, राजा दारा जाग गवा अउ सेरन क माँद कइँती दउड़ा। 20राजा बहोत चिंतित रहा। राजा जब सेरन क माँद क लगे गवा तउ हुवाँ उ दानियेल क जोर स अवाज लगाएस। राजा कहेस, “हे दानियेल, हे जिअत परमेस्सर क सेवक, का तोहार परमेस्सर, जेकर तू हमेसा उपासना करत ह, तोहका सेरन स बचावइ में सामर्थ भवा ह?”

21दानियेल जवाब दिहेस, “राजा, अमर रहइँ। 22मोर परमेस्सर मोका बचावइ बरे सरगदूत पठए रहा। उ सरगदूत सेरन क मुँह बन्द कइ दिहेस। सेरन मोका कउनो हानि नहीं पहुँचाएन काहेकि मोर परमेस्सर जानत ह कि मई निरपराध हउँ। मई राजा क बरे कबहुँ कउनो बुरा नहीं किहेउँ ह।”

23राजा दारा बहोत खुस रहा। राजा आपन सेवकन क हुकूम दिहेस कि उ पचे दानियेल क सेरन क माँद स बाहेर हींच लेइँ। जब दानियेल क सेरन क माँद स बाहेर लिआवा गवा तउ ओका ओह पइ कउनो जखम नहीं देखाइ दिहेस। सेरन दानियेल क कउनो भी तरह क हानि नहीं पहुँचाए रहा। काहेकि उ आपन परमेस्सर पइ बिस्वास किहेस।

24एकरे पाछे राजा ओन लोगन क जउन दानियेल पइ अभियोग लगाइके ओका सेरन क माँद में डलवाए रहेन, बोलवावइ क आदेस दिहेस अउर ओन लोगन क, ओनकर मेहररूअन क अउर ओनके गदेलन क सेरन क माँद में फेंकवाइ दिहे रहा। एहसे पहिले कि उ पचे सेरन क माँद में धरती पइ गिरतेन, सेरन ओनका दबोच लिहिन। सेर ओनके तनन क खाइ गएन अउर फुन ओनकर हाइन क चूर-चूर कइ दिहेन।

25एह पइ राजा दारा सारी धरती क लोगन, दूसर जाति क अलग - अलग भासा बोलइवालन क इ पत्र लिखेस:

“सुभकामनाएँ

26मई एक तु नेम बनावत हउँ। मोरे राज क हर भाग क लोगन क बरे इ नेम होइ। तू पचे सबहिँ लोगन क दानियेल क परमेस्सर क भय मानइ चाही अउर ओकर आदर कइ चाही।

दानियेल क परमेस्सर जिअत अहइ। परमेस्सर सदा-सदा अमर रहत ह। साम्राज कबहुँ ओकर खतम नहीं होइ ओकरे सासन क अंत कबहुँ नहीं होइ 27परमेस्सर लोगन क बचावत ह अउर रच्छा करत ह। सरग में अउ धरती क ऊपर परमेस्सर अद्भूत अचरजे स भरा करम करत ह। परमेस्सर दानियेल क सेरन स बचाइ लिहेस।”

28इ तरह जब दारा क राज रहा अउर जिन दिनन फारसी राजा कुसू क हुकूमत रही, दानियेल सफलता प्राप्त किहस।

चार पसुअन क बारे में दानियेल क सपना

7 बेलससर क बाबुल पड़ सासन काल क पहिले बरिस दानियेल क एक ठु सपना आवा सपने में आपन पलंग पड़ ओलरे भए दानियेल, इ सबइ दर्सन लखेन। दानियेल जउन सपना लखे रहा, ओका लिख लिहस। 2दानियेल बताएस, “राति में मई सपना में एक दर्सन पाएँ। मई लखेउँ कि चारिहुँ दिसा स हवा बहत अहइ अउर ओन हवा स सागर उफनइ लाग। 3फुन मई तीन पसुअन क लखेउँ। हर पसु दूसर पसु स भिन्न रहा। उ पचे चारिहुँ पसु समुद्र में स उभरिके बाहर निकरे रहेन।

4“ओनमाँ स पहिला पसु सिंह क समान देखाइ देत रहा अउर उ सिंह क उकाब क जइसे पंख रहेन। मई उ पसु क लखेउँ। फुन मई लखेउँ कि ओकर पंख उखाड़ फेंका गवा अहइ। धरती पड़ स उ पसु क इ तरह उठावा गवा जेहसे उ कउनो मनई क समान आपन दुइ गोड़न पड़ खड़ा होइ गवा। एँका मनई क दिमाग दइ दीन्ह गवा रहा।

5“अउर फुन मई लखेउँ कि मोरे समन्वा एक अउर दूसर पसु मौजूद अहइ। इ पसु एक भालू क नाई रहा। उ आपन एक बगल पड़ उठा भवा रहा। उ पसु क मुहँ स दाँतन की बीच तीन पसलियन रहिन। उ भालू स कहा गवा रहा, ‘उठा अउर तोहका जेतना चाही ओतना माँस खाइ ल्या।’

6“एकरे पाछे, मई लखेउँ कि मोरे समन्वा एक अउर पसु खड़ा अहइ। इ पसु चीते जइसा लगत रहा अउर उ चीता क पिठिया पड़ चार पंख रहेन। पंख अइसे लगत रहेन, जइसे उ पचे कउनो चिरइया क पंख होई। इ पसु क चार ठु सिर रहेन, अउर ओका हुकूमत क अधिकार दीन्ह गवा रहा।

7“एकरे पाछे, सपना में रात क मई लखेउँ कि मोरे समन्वा एक अउर चौथा जनावर खड़ा अहइ। इ जनावर बहोतइ खूँखार अउर भयानक लगत रहा। उ बहोत मजबूत देखाई देत रहा। ओकरे लोहे क लम्बे-लम्बे दाँत रहेन। इ जनावर अपने सिकारन क कुचर कइके खाइ डावत रहा अउर सिकार क खाइ चुकइ क पाछे जड़न कछू बचि रहत, उ ओका आपन गोड़न क तरे कुचरि डावत रहा। इ पसु स पहिले मई सपना में जउन पसु लखे रहेउँ, उ चउथा पसु ओन स अलग रहा। इ पसु क दस ठु सींग रहेन।

8“अबहिं मई ओन सींगन क बारे में सोच ही रहेउ कि ओन सींगन क बीच एक ठु अउर सींग जमि आवा। इ सींग बहोत छोट रहा। इ छोटे सींग पड़ आँखिन रहिन, अउर उ सबइ आँखिन कउनो मनई क आँखिन जइसी रहिन। इ छोटके सींग में एक मुँह भी रहा अउर उ खुद क प्रसंसा करत रहा। इ छोटका सींग दूसर सींगन में स तीन ठु सींग उखाड़ फेकेस।

चउथे पसु क निआव

9“मोर लखत ही लखत, ओनकी जगह पड़ सिंहासन रखे गएन अउर उ सनातन राजा* सिंहासन पर बिराज गवा।

ओकर ओढ़ना बहोतइ उज्जर रहेन, उ सबइ ओढ़नन बर्फ जइसे सफेद रहेन। ओकर सिंहासन आगी क बना रहा अउर ओकर पहियन लपटन स बना रहेन। 10प्राचीन राजा क समन्वा एक आगी क नदी बहत रही। लाखों करोड़ों लोग ओकर सेवा में रहेन। ओकरे समन्वा करोड़न दास खड़ा रहेन। निआवधीस ओकर समन्वा बइठेस अउर पुस्तकन खोली गइ होई।

11“मई लखत क लखत रहि गएँ काहेकि उ छोटका सींग डींगन मारत रहा। मई उ समइ तलक लखत रहेउँ जब अन्तिम रूप स चउथे पसु क हलिया कइ दीन्ह गइ। ओकरी देह क नस्ट कइ दीन्ह गवा अउर ओका धधकत आगी में डाइ दीन्ह गवा। 12दूसर पसुअन क सक्ति अउर राजसता ओहसे छीन लीन्ह गएन। किन्तु एक निहचित समइ तक ओनक जिअत रहइ दीन्ह गवा।

13“राति क मई आपन दिव्व सपन में लखेउँ कि मोर समन्वा कउनो खड़ा अहइ, जउन मनई जइसा देखाई देत रहा। उ अकास में बादरन पड़ सवार होइके आवत रहा। उ उ सनातन राजा क लगे आवा रहा। तउ ओका ओकरे समन्वा लइ आवा गवा।

14“उ जउन मनई क समान देखाई देत रहा, ओका अधिकार, महिमा अउर सम्पूर्ण सासन सत्ता सौंप दीन्ह गइ। सबहिं लोग, सबहिं जातियन अउर प्रत्येक भासा-भासी लोग ओकर आराधना करिहीं। ओकर राज अमर रही। ओकर राज सदा बना रही। उ कबहुँ नस्ट नाहीं होइ।

चउथे पसु क सपन क फल

15“मई, दानियेल बहुत विकल अउ चिंतित रहेउँ। उ सबइ दर्सन जउन मई लखे रहेउँ, उ सबइ मोका विकल बनाए भए रहेन। 16मई जउन हुवाँ खड़ा रहेउँ, ओनमाँ स एक क लगे पहाँचेउँ। मई ओहसे पूछेउँ, “इ सब कछू क अरथ का अहइ? “तउ उ बताएस, उ मोका समुझाएस कि एन बातन क मतलब का अहइ। 17उ कहेस, ‘उ पच इ चार बड़के पसु, चार राज अहइ। उ सबइ चारिहुँ राज धरती स उ मरिहीं। 18किन्तु परमेस्सर क पवितर लोग उ राज क प्राप्त करिहीं जउन एक अमर राज होइ।’

19“फुन मई इ जानइ चाहेउँ कि उ चउथा पसु का रहा अउर ओकर का अभिप्राय रहा? उ चउथा पसु सबहिं दूसर पसुअन स भिन्न रहा। उ बहोत भयानक रहा। ओकर दाँत लोहे क रहेन, अउर पंजे काँसे क रहेन। उ पसु रहा, जउन आपन सिकार क चकनाचूर कइके पूरी तरह खाइ लिहे रहा, अउर आपन सिकार क खाइ क पाछे जउन कछू बचा रहा, ओका आपन गोड़वन क तले रौंद डाए रहा। 20उ चउथे पसु क सिर पड़ जउन दस सींग रहेन, मई ओनके बारे में जानइ चाहेउँ अउर मई उ सींग क बारे में जानइ चाहेउँ जउन हुवाँ सींगन में स तीन ठु सींग उखाड़ि फेंके रहेन। उ सींग दूसर सींगन स जियादा बड़का देखाई देत रहा। ओकर आँखिन रहिन अउर उ आपन डींग हँकि चला जात रहा। 21मई

सनातन राजा साब्दिक “प्राचीन दिनन” में इ नाउँ परमेस्सर बरे इ दिखावत ह कि परमेस्सर बहोत पहिले स महान राजा रहत आवा ह।

लखत ही रहेउँ कि उ सींग परमेस्सर क पवितर लोग क विरुद्ध युद्ध अउर ओन पड़ हमला करब सुरू कइ दिहस ह अउर उ सींग ओनका मारि डावत अहइ। 22परमेस्सर क पवितर लोग क उ सींग उ समइ तलक मारत रहा जब तलक सनातन राजा आइके उ सींग क निर्णय नार्हीं किहस। उ निर्णय परमेस्सर क पवितर लोग क पच्छ में रहा। अउर ओनका ओनके आपन राज क प्राप्ति होइ गइ।

23“अउर फुन उ सपना क मोका इ तरह समुझाएस कि उ चउथा पसु, ‘उ चउथा राज अहइ जउन धरती पड़ आई। उ राज दूसर सबहिं राजन स अलग होइ। उ चउथा राज संसार में सब कहुँ लोगन क बिनास करी। संसार क सबहिं देसन क उ आपन गोइन तले रौदी अउर ओनकर टूका-टूका कइ देइ। 24उ सबइ दस सींग उ सब दस राजा अहइ, जउन इ चउथे राज में अइही। एन दसन राजा लोगन क चले जाइ क पाछे एक ठु अउर राजा आई। उ राजा अपने स पहिले क राजा लोगन स अलग होइ। उ ओनमें स तीन दूसर राजा लोगन क पराजित करी। 25इ बिसेस राजा सर्वोच्च परमेस्सर क विरुद्ध बातन करी तथा उ राजा परमेस्सर क पवितर लोगन क नोस्कान पहोंचाइ अउर ओनकर बध करी। जउन पवितर उत्सव अउर जउन नेम इ समइ प्रचलन में अहइ उ राजा ओनका बदलइ क जतन करी। परमेस्सर क पवितर लोग सोढ़े तीन बरिस तलक उ राजा क सक्ति क अधीन रहिहीं।

26“किन्तु जउन कछू होब अहइ, ओकर निर्णय निआवालय करी अउर उ राजा स ओकर सक्ति छोरि लीन्ह जाइ। ओकरे राज क पूरी तरह अन्त होइ। 27फिन परमेस्सर क पवितर लोग उ राज क हुकूमत चलइहीं। धरती क सबहिं राजन क सबहिं लोगन पड़ सासन होइ। इ राज सदा सदा अटल रही, अउर दूसर सबहिं राजन क लोग ओनका आदर देइहीं अउर ओनकर सेवा करिहीं।’

28“इ तरह उ सपना क अंत भवा। मइँ, दानियेल तो बहोत डेराइ गवा रहेउँ। डर स मोर मुँह पीला पड़ गवा रहा। मइँ जउन बातन लखे रहेउँ अउर सुने रहेउँ, मइँ ओनके बारे में दूसर लोगन क नार्हीं बताएउँ।”

भेड़न अउ बोकस क बारे में दानियेल क दर्सन

8 बेलससर क सासन काल क तीसरे बरिस मइँ इ दर्सन लखेउँ। इ उ पहिले वाल दर्सन क बाद क दर्सन रहा। 2मइँ लखेउँ कि मइँ सूसन नगर में हउँ। सूसन, एलाम प्रान्त क राजधानी रही। मइँ ऊलै नदी क किनारे पड़ खड़ा रहेउँ। 3मइँ आँखिन ऊपर उठाएउँ तउ लखेउँ कि ऊलै नदी क किनारे पड़ एक भेड़ा खड़ा अहइ। उ भेड़ा क दुइ लम्बे सींग रहेन। जदपि ओकर दुइनउँ ही सींग लम्बे रहेन। पर एक सींग दूसर स लम्बा रहा। लम्बा वाला सींग छोटैवाले सींग क बाद में जमा रहा। 4मइँ लखेउँ कि उ भेड़ा कबहुँ पच्छिम कइँती दउड़त रहा तउ कबहुँ उत्तर कइँती, अउर कबहुँ दक्खिन कइँती अउर सींग मारत फिरत रहा। उ भेड़ा क कउनो भी पसु रोक नार्हीं पावत अहइ अउर न ही कउनो दूसर पसुअन क बचाइ पावत अहइ। उ

भेड़ा सब कछू कइ सकत रहा, जउन कछू उ कइ चाहत रहा। इ तरह स उ भेड़ा बहोतइ सक्तिसाली होइ गवा।

5मइँ उ भेड़ा क बारे में सोचइ लगा। मइँ अबहिं सोचत ही रहत रहा कि पच्छिम कइँती स मइँ एक बोकस क आवत लखेउँ। इ बोकस धरती पड़ दौड़ गवा। किन्तु उ बोकस क गोड़ धरती पड़ छुए तलक नार्हीं। इ बोकस क एक लम्बा सींग रहा। जउन साफ-साफ दिखत रहा, उ सींग बोकस क दुइनउँ आँखिन क बीचउ-बीच रहा।

6फिन उ बोकस उ दुइ सींगवाले भेड़न क लगे आवा। इ उहइ भेड़ा रहा जेका मइँ ऊलै नदी क किनारे खड़ा लखे रहेउँ। उ बोकस किरोध स भरा भवा रहा। तउ उ भेड़ा क तरफ लपका। 7बोकस क उ भेड़े क तरफ परात भए मइँ लखेउँ। उ बोकस गुस्सा में आग बबूला होत रहा। तउ उ भेड़ा क दुइनउँ सींग तोड़ डाएस। भेड़ा बोकस क रोक नार्हीं पाएस। बोकस भेड़ा क धरती पड़ पछाड़ दिहस अउर फुन उ बोकस उ भेड़ा क गोड़न तले कुचर दिहस। हुआँ उ भेड़ा क बोकस स बचावइ वाला कउनो नार्हीं रहा।

8तउ बोकस बहोत सक्तिसाली बन बइठा। किन्तु जब उ सक्तिसाली बना, ओकर बड़का सींग टूट गवा अउर फुन उ बड़के सींग क तरह चार सींग अउर निकरि आएन। उ सबइ चारिहुँ सींग आसानी स देखाई पड़त रहेन! उ सबइ चार सींग अलग-अलग दिसा कइँती मुड़े भए रहेन।

9फुन ओन चारिहुँ सींगन में स एक छोटा सींग अउर निकरि आवा। उ छोटा सींग बड़इ लाग अउर बड़त-बड़त बहोत बड़ा होइ गवा। इ सींग दक्खिन-पूरब कइँती बढ़ा। इ सींग सुन्नर धरती कइँती बढ़ा।

10उ छोटा सींग बड़िके बहोत बड़ा होइ गवा। उ बड़त बड़त अकास छुड़ लिहस। उ नान्ह सींग, हिआँ तलक कि कछू तारन क भी धरती पड़ पटक दिहस अउर ओन सबहिं तारन क गोड़न तले मसल दिहस। 11उ नान्ह सींग बहोत मजबूत होइ गवा अउर फुन उ तारन क सासक (परमेस्सर) क विरुद्ध हो गवा। उ नान्ह सींग उ सासक क अर्पित कीन्ह जाइवाली बलियन क रोक दिहस। उ ठउर जहाँ लोग उ सासक क उपासना किया करत रहेन, उ ओका उजाड़ दिहस 12अउर ओनकर फउज क भी हराइ दिहस अउर एक विद्रोही कार्य क रूप में उ नान्ह सींग दैनिक बलियन क ऊपर अपने आप क स्थापित कइ दिहस। उ सच क धरती पड़ पटक दिहस। उ नान्ह सींग जउन कछू किहस उ सब कछू में सफल होइ गवा।

13फुन मइँ कउनो पवितर जन क बोलत सुनेउँ अउर ओकरे पाछे मइँ सुनेउँ कि कउनो दूसर पवितर मनई उ पहिले पवितर मनई क जवाब देत अहइ। पहिला पवितर मनई कहेस, “इ दर्सन दर्सावत ह कि दैनिक बलियन क का होइ? इ उ भयानक पाप क बारे में अहइ जउन बिनास डावत ह। इ दर्सावत ह कि जब लोग उ सासक क पूजा स्थल क तोड़ डइहीं तब का होइ? इ दर्सन दर्सावत ह कि जब लोग उ समूचे ठउर क गोड़न तले रौदिहीं तब का होइ? इ दर्सन दर्सावत ह कि जब लोग तास क ऊपर गोड़ धरहीं तब का होइ? किन्तु इ सबइ बातन कब तलक होत रइहीं?”

14दूसर पवित्तर मनई कहेस, “दुइ हजार तीन सौ दिन तलक अइसा ही होत रही अउर ओकरे पाछे पवित्तर ठउर क फुन स स्थापित कइ दीन्ह जाइ।”

दर्शन क व्याख्या

15मई, दानियेल इ दर्शन लखे रहेउँ, अउर इ प्रयत्न किहेउँ कि ओकर अरथ समुझ लेउँ। अबहिँ मई इ दर्शन क विसय में सोच ही रहे रहेउँ कि मनई क जइसा देखाइवाला कउनो अचानक आइके मोरे समन्वा खड़ा होइ गवा। 16एकरे पाछे मई कउनो मनई क वाणी सुनेउँ। इ वाणी ऊलै नदी क ऊपर स आवति रही। उ अवाज कहेस, “जिब्राएल, इ मनई क एकर दर्शन क अरथ समुझाइ द्या।”

17तउ जिब्राएल जउन कउनो मनई क समान देखौत रहा, जहाँ मई खड़ा रहेउँ, हुआँ आइ गवा। उ जब मोरे लगे आवा तउ मई बहोत डेराइ गएउँ। मई धरती पइ भहराइ पड़ेउँ। किन्तु जिब्राएल मोहसे कहेस, “अरे मनई, समुझ ल्या कि इ दर्शन अंत समइ बरे अहइ।”

18अबहिँ जिब्राएल बोलत ही रहत रहा कि मोका नीदं आइ गइ। नीदं बहोतइ गहरी रही। मोर मुख धरती कइँती रहा। फुन जिब्राएल मोका छुएस अउर मोहसे मोर गोड़न पइ खड़ा कइ दिहस। 19जिब्राएल कहेस, “लखा, मई तोहका अब, उ दर्शन क समझावत हउँ। मई तोहका बताउब कि परमेस्सर क क्रोध क समइ क बाद में का कछू घटी।

20“तू दुइ सींगनवाला भेड़ा लखे रह्या। उ सबइ दुइ सींग अहई मादी अउ फारस क दुइ देस। 21इ बोकरा युनान क राजा अहइ। ओकर दुइ आखिन क बीच क बड़ा सींग उ पहिला राजा अहइ। 22उ सींग टूट गवा अउ ओकरे ठउर क चार सींग निकरि आएन। उ सबइ चार सींग चार राज अहई। उ सबइ चार राज, उ पहिले राजा क राष्ट्र स परगट होइहीं किन्तु उ सबइ चारिहुँ राज उ पहिले राजा क स मजबूत नाहीं होइहीं।

23“जब ओन राजन क अंत ओन लोगन क जरिये बुरा करम करइ क पाछे निकट होइ, तब हुवाँ एक हटी राजा जउन कि पहिलियन क समुझ सकत ह उठ खड़ा होइ। 24इ राजा बहोत सक्तिसाली होइ किन्तु ओकर सक्ति ओकर आपन नाहीं होइ। इ राजा भयानक तबाहीं मचाइ देइ। उ जउन कछू करी ओहमाँ ओका सफलता मिली। उ सक्तिसाली लोगन-हिआँ तलक कि परमेस्सर क लोग क भी नस्त कइ देइ।

25“इ राजा बहोत चुस्त अउ मक्कार होइ। उ आपन कपट अउ झूठन क बल पइ सफलता पाइ। उ अपने आप क सब स बड़कवा समुझी। लोगन क उ बिना कउनो चितउनी क नस्त करवाइ देइ। हिआँ तलक कि उ राजा लोगन क राजा (परमेस्सर) स भी जुद्ध क जतन करी किन्तु उ जफाकस राजा क सक्ति क खतम कइ दीन्ह जाइ अउर ओकर अंत कउनो मनई क हाथन नाहीं होइ।

26“अउर साम अउ सुबह क दर्सन फुरइ अहई। किन्तु इ दर्शन पइ तू मुहर लगाइके रख द्या। काहेकि उ सबइ बातन अबहिँ बहोत सारे समइ तलक घटइवाली नाहीं अहइ।”

27उ दिब्ब दर्सन क बाद में मई दानियेल, बहोत कमजोर होइ गवा अउर बहोत दिनन तलक बीमार पड़ा रहा। फुन बेरामी स उठिके मई लउटिके राजा क कामकाज करब सुरू कइ दिहस किन्तु उ दिब्ब दर्शन क कारण में बहोत बियाकुल रहा करत रहा। मई उ दर्शन क अरथ समुझ ही नाहीं पाए रहेउँ।

दानियेल क बिनती

9 मादी दारा क हुकूमत क पहिले बरिस में, जउन छयर्स राजा क पूत रहा जउन कसदियन क राजा रहा। 2दारा क राजा क पहिले बरिस में मई, दानियेल कछू किताबन पड़त रहेउँ। ओन किताबन में मई लखेउँ कि यहोवा यिर्मयाह क इ बताएस ह कि यरूसलेम क पुनः निर्माण कितने बरिस बाद होइ। यहोवा कहे रहा कि एहसे पहिले कि यरूसलेम फुन स बसइ, सत्तर बरिस बीत जइहीं।

3फुन मई आपन सुआमी परमेस्सर कइँती मुड़ेउँ अउर ओहसे पराथना करत भए मदद क याचना किहेउँ। मई भोजन करब तजि दिहेउँ अउर अइसे ओढ़ना पहिर लिहेउँ जेहसे इ लागइ कि मई दुःखी हउँ। मई अपने मूँइ पइ धूरि डाल दिहेउँ। 4मई आपन परमेस्सर यहोवा स पराथना करत भए ओका आपन सबहिँ पाप बताइ दिहेउँ। मई कहेउँ, “हे यहोवा, तू महान अउ भयजोग्ग परमेस्सर अहा। जउन लोग तोहसे पिरिम करत हीं, जउन तोहरे आदेसन क पालन करत हीं, तू ओनके संग आपन पिरिम अउ दयालुता क करार क निभावत ह।

5“मुला हे यहोवा, हम पचे पापी अही। हम पचे बुरा किहे अही। हम पचे कुकरम किहे अही। हम पचे तोहार विरोध किहा ह। तोहार निस्पच्छ निआत अउर तोहरे आदेसन स हम पचे दूर भटक गए अही। हम पचे नबियन क बात नाहीं सुनित। नबी तउ तोहार सेवक अहई। उ पचे तोहरे बारे में हमारे राजा लोगन, सासकन अउ धरती क सारे लोगन क बारे में भी बात किहेस।

7“हे यहोवा, तू नीक अहा, अउर तोहमाँ नेकी अहइ। जबकि आजु हम आपन बुरे करम स लज्जित अही। यरूसलेम अउ यहूदा क लोग लज्जित अहई-इस्त्राएल क सबहिँ लोग लज्जित अहई। उ सबइ लोग जउन निआरे अहई अउर उ सबइ लोग जउन बहोत दूर अहई। हे यहोवा, तू ओन लोगन क बहोत स देसन में फइलाइ दिहा। ओन सबहिँ देसन में बसे इस्त्राएल क लोगन क लज्जा आवइ चाही। हे यहोवा, ओन सबहिँ बुरी बातन क बरे, जउन उ पचे तोहर विरुद्ध किहेन ह, ओनका लज्जित होइ चाही।

8“हे यहोवा, हम सब क लज्जित होइ चाही। हमारे सबहिँ राजा लोगन अउ मुखिया लोगन क लज्जित होइ चाही। अइसा काहे? अइसा एह बरे कि हे यहोवा, हम तोहरे विरुद्ध पाप किहे अही।

9“किन्तु हे यहोवा, तू दयालु अहा। लोग, जउन बुरे करम करतेन तउ तू ओनका, छमा कइ देत ह। हम असल में तोहसे मुँह फेर लिहा ह। 10हम आपन यहोवा परमेस्सर क आग्या क पालन नाहीं कीन्ह। यहोवा आपन सेवकन, आपन नबियन क जरिये हमका व्यवस्था क विधान प्रदान

किहस। किन्तु हम पचे ओकर व्यवस्थन क नाहीं माना। 11इस्राएल क कउनो भी मनई तोहरी सिच्छन पड़ नाहीं चला। उ पचे सबहिं राह स भटक ग रहेन। उ पचे तोहरे आदेसन क पालन नाहीं किहन। मूसा, जउन परमेस्सर क सेवक रहा क ब्यवस्था अउर विधान में सरापन अउ गम्भीर चिताउनी क उल्लेख भवा ह। उ सबइ सराप अउ चिताउनी ब्यवस्था अउर विधान पड़ नाहीं चलइ क दण्ड क बखान करत हीं अउर उ सबइ सबहिं बातन हमरे संग घट चुकी अहई काहेकि हम यहोवा क विरोध में पाप किहा ह।

12“परमेस्सर बताए रहा कि हमरे संग अउ हमरे मुखिया लोगन क संग उ सबइ बातन घटिहीं अउर उ ओनका घटाइ दिहस। उ हमरे संग भयानक बातन घटाइ दिहस। यरूसलेम क जेतना कस्ट उठावइ क पड़ा, कउनो दूसर नगर नाहीं उठाएस। 13उ सबइ सबहिं भयानक बातन जउन मूसा क व्यवस्था क विधान में लिखा अहई हमरे संग भी घटिन। किन्तु हम अबहुँ भी यहोवा हमरे परमेस्सर स मदद माँगइ नाहीं परत ह। हम अबहुँ भी आपन पाप करब नाहीं तजा ह। अबहुँ तलक भी हम तोहस सच्चाई क अनुसार रहना सीखइ में रूची नाहीं रखत हउँ। 14यहोवा उ सबइ खौफनाक बातन तइयार रख छोड़े रहिन अउर उ हमरे संग ओन बातन क घटाइ दिहस। हमार परमेस्सर यहोवा अइसा एह बरे किहे रहा कि उ तउ जउन कछू भी करत ह, निआव ही करत ह। किन्तु हम अबहुँ भी ओकर नाहीं सुनित।

15“हे सुआमी हमार परमेस्सर, तू आपन महान सक्ति क प्रयोग किहा अउर हमका मिस्र स बाहेर निकारि लिआया। हम तउ तोहार आपन लोग अही। आजु तलक उ घटना क कारण तू जाना जात अहा। हे सुआमी, हम पाप किहा ह। हम खौफनाक पाप किहा ह। 16हे सुआमी, यरूसलेम पड़ किरोध करब तजि द्या। यरूसलेम तोहार पवित्र पर्वतन पड़ टिका अहइ। तू जउन करत अहा, ठीक ही करत अहा। एह बरे यरूसलेम पड़ किरोधित होब तजि द्या। हमरे आसपास क लोग हमार अपमान करत हीं अउर हमरे लोगन क हँसी उड़ावत हीं। हम लोगन क पाप अउर हम लोगन क पुरखन क पापन क कारण इ सबइ कछू भएस ह।

17“अब, हे यहोवा, तू मोर पराथना सुनि ल्या। मई तोहार दास हउँ। मदद बरे मोर बिनती सुन ल्या। आपन पवित्र ठउर बरे तू अच्छी बातन करा। उ भवन नस्ट कइ दीन्ह गवा रहा। किन्तु हे यहोवा, तू खुद आपन भले बरे इ भली बातन क करा। 18हे मोर परमेस्सर, हम लोगन क सुना। जरा आपन आँखिन खोला अउर हमरे संग जउन खौफनाक बातन घटी अहई, ओनका लखा। उ नगर जउन तोहरे नाउँ स गोहरावा जात रहा, लखा ओकरे संग का होइ गवा ह। मई इ नाहीं कहत हउँ कि हम अच्छे लोग अही। मई पराथना करत हउँ काहेकि मई जानत हउँ कि तू बहोत दयालु अहा।

19“हे सुआमी मोर सुना, हे यहोवा, हमका छिमा करा। हे सुआमी, हम पड़ धियान द्या, अउर फुन कछू करा। अब अउर प्रतीच्छा जिन करा। इहइ समइ कछू करा। ओका तू खुद अपने भले बरे करा। हे सुआमी, अब तउ आपन नगर

अउर आपन ओन लोगन क बरे, जउन तोहरे नाउँ स गोहरावा जात हीं कछू करा।”

सतर हफतन क बारे में दर्सन

20मई परमेस्सर स पराथना करत भए इ सबइ बातन कहत रहेउँ। मई इस्राएल क लोगन क अउर आपन पापन क बारे में बतावत रहेउँ। मई यहोवा हमार परमेस्सर क पवित्र पर्वत पड़ पराथना करत रहेउँ। 21मई अबहिं पराथना करत ही रहेउँ कि जिब्राएल मोरे लगे आवा। जिब्राएल उहइ सरगदूत रहा जेका मई दर्सन में लखे रहेउँ। जिब्राएल हाली स मोरे लगे आवा। उ सौंझ क बलि क समइ आवा रहा। 22मई जउन बातन क समुझइ चाहत रहा, ओन बातन क समुझइ में जिब्राएल मोर मदद किहेस। जिब्राएल कहेस, “हे दानियेल, मई तोहका बुद्धि प्रदान करइ अउ समुझइ में तोर सहायता क आवा हउँ। 23जब तू पहिले पराथना आरंभ किहे रही, आदेस देइ दीन्ह गवा रहा अउ लखा मई तोहका बतावइ आइ गवा हउँ। परमेस्सर तोहका बहोत पिरम करत ह। इ आदेस तहोरी समुझ में आइ जाइ अउर तू उ दर्सन क अरथ जान लेब्या।

24“हे दानियेल, परमेस्सर तोहार प्रजा अउ तोहार पवित्र नगरी बरे सतर हफतन क समइ निहचित किहेस ह। सतर हफतन क समइ एह बरे निहचित कीन्ह गवा ह ताकि बुरे करम खत्म कइ दीन्ह जाइँ, अउर पाप करब बन्द कइ दीन्ह जाइ, पापन बरे प्रायश्चित कीन्ह जाइ, हमेसा बरे निआव स्थापित कीन्ह जाइ। सब लोगन क सुद्ध कीन्ह जाइ, सदा-सदा बनी रहइवाली नेकी क लिआवा जाइ, दर्सन अउ नबियन पड़ मोहर लगाइ दीन्ह जाइ, अउर पवित्र ठउरे क समर्पित कीन्ह जाइ।

25“दानियेल, तू एन बातन क समुझ ल्या। एन बातन क गियान रखा। जब वापस आवइ अउ यरूसलेम क पुनःनिर्माण करइ क आदेस दीन्ह गवा रहा क समइ स लइके अभिसिक्त कीन्ह गवा क आवइ क समइ तलक सात हफता लगिहीं। सर्वजिनिक बाजार क निर्माण अउ नगर क रच्छा करइ बरे नगर क चारिहुँ कईती खाई खोदइ क संग नगर क बासठ हफतन में निर्माण कीन्ह जाइहीं। बासठ हफता तलक यरूसलेम क बसावा जाइ। 26बासठ हफता पाछे उ अभिसिक्त मनई क हतिया कइ दीन्ह जाइ। उ अउर नाहीं रहब्या। फुन होइवाले नेता क लोग नगर क अउर उ पवित्र ठउरे क तहस-नहस कइ देइहीं। उ अंत अइसे आइ जइसे बाइ आवत ह। अंत तलक जुद्ध होत रही। उ ठउरे क पूरी तरह तहस-नहस कइ देइ क परमेस्सर आदेस दइ चुका ह।

27“एकरे पाछे उ भावी सासक बहोत स लोगन क संग एक करार करी। उ करार एक हफता तलक चली। भेंटन अउ बलियन आधे हफता क पाछे रुकी रहिहीं अउर फुन एक विनासकर्ता आई। उ बहोत सारा घृणित काम करिहीं। किन्तु ओनकर पूरा करइ स पहिले, जउन आदेस दीन्ह गवा ह उ विध्वंस करइवालन क खिलाफ कीन्ह जाइहीं।”

हिद्देकेल नदी क किनारे दानियेल क दर्सन

10 कुसू फारस क राजा रहा। कुसू क सासनकाल क तीसरे बरिस दानियेल क एन बातन क दैवी संदेश मिला। (दानियेल क ही दूसर नाउँ बेलतसस्सर रहा) इ सबइ बातन फुरइ रहेन किन्तु समुझइ बरे बहोत कठिन रहेन। किन्तु दानियेल ओन क समुझ गवा। उ सबइ बातन एक दर्सन में ओका समुझाई गई रहिन।

2दानियेल क कहब अहइ, “उ समइ, मई दानियेल, तीन हफतन तलक बहोत दुःखी रहा। 3ओन तीन हफतन क दौरान, मई कउनो भी उत्तम खाना नहीं खाएउँ। मई दाखरस नहीं पिएउँ। कउनो भी तरह क तेल मई आपन मुँड़े पड़ नहीं डाएउँ। तीन हफता तलक मई अइसा कछू भी नहीं किहेउँ।

4“बरिस क पहिले महीने क चउबीसवें दिन मई हिद्देकेल महानदी क किनारे खड़ा रहेउँ। 5हुवाँ खड़े-खड़े जब मई ऊपर कइँती लखेउँ तउ हुँवा मई एक मनई क आपन समन्वा खड़ा पाएउँ। उ सन क कपड़ा भवा रहा। ओकर करिहाउँ में निखालिस सोना क बनी भइ कमर बंर रही। 6ओकर बदन चमचमात पाथर क जइसे रही। ओकर मुँह बिजुरी क समान उज्जर रहा। ओकर बाँहन अउर ओकर गोड़ चमकदार पीतर स झिलमिलात रहेन। ओकर अवाज एतनी ऊँच रही जइसे लोगन क भीड़ क अवाज होत ह।

7“इ दर्सन बस मोका, दानियेल क भवा। जउन लोग मोरे संग रहेन, उ सबइ जदपि उ दर्सन क नहीं लखि पाएन किन्तु उ सबइ फुन डर गए रहेन। उ पचे एतना डर गएन कि पराइके कहुँ जाइ छिपेन। 8तउ मई अकेल्ला छूटि गएउँ। मई उ दर्सन क लखत रहेउँ अउर उ दृश्य मोका भयभीत कइ डाए रहा। मोर सक्ति जात रही। मोर मुँह अइसे पिअर पड़ गवा जइसे माना उ कउनो मरे भए मनई क मुँह होइ। मई बेवस रहा। 9फुन दर्सन क उ मनई क मई बात करत सुनेउँ। मई ओकर अवाज क सुनत ही रहेउँ कि मोका गहिर नींद घेरि लिहस। मई धरती पइ औँधें मुँह पड़ा रहेउँ।

10“फिन एक हाथ मोका छुड़ लिहस। अइसा होइ पड़ मई आपन हाथन अउ आपन घुटनन क बल खड़ा होइ गवा। मई डर क मोरे थर थर काँपत रहेउँ। 11दर्सन क उ मनई मोहसे कहेस, ‘दानियेल, तू परमेस्सर क बहोत पियारा अहा। जउन सब्द मई तोहसे कहउँ ओह पड़ तू सावधानी से पियार करा। खड़ा हवा। मोका तोहरे लगे पठवा गवा ह। जब उ अइसा कहेस तउ मई खड़ा होइ गवा। मई अबहुँ भी थर-थर काँपत रहेउँ काहेकि मई डेरान भवा रहा। 12एकरे बाद दर्सन क उ मनई फुन बोलन सुरू किहेस। उ कहेस, ‘दानियेल, जिन डेराअ। पहिले ही दिन स तू इ निहचइ कइ लिहे रह्या कि तू परमेस्सर क समन्वा विवेक पूर्ण अउर विनम्र रहब्या। परमेस्सर तोहार पराथनन क सुनत रहत ह। तू पराथना करत रहा ह, मई एह बरे तोहरे लगे आवा हउँ।

13“किन्तु फारस क जुवराज (सरगदूत) इक्कीस दिन तलक मोर संग लड़त रहा अउर मोका तंग करत रहा। एकरे बाद मिकाएल जउन एक बहोतइ महत्व पूर्ण जुवराज

रहा। मोर मदद बरे मोरे लगे आवा काहेकि मई हुवाँ फारस क राजा क संग अरइ भवा रहा।’

14“हे दानियेल, अब मई तोहरे लगे तोहका उ बतावइ क आवा हउँ जउन भविस्स में तोहरे लोगन क संग घटइवाला अहइ। कहा सपना आवइवाले भविस्स क बारे में अहइ।’

15“अबहिँ उ मनई मोहसे बात ही करत रहा कि मई धरती क तरफ खाले मुँह निहुराइ लिहेउँ। मई बोल ही नहीं पावत रहा। 16फुन कउनो जउन मनई क जइसा देखाइ देत रहा, मोरे होठन क छुएस। मई आपन मुँह खोलेउँ, अउ बोलब सुरू किहेउँ। मोरे समन्वा जउन खड़ा रहा, ओहसे मई कहेउँ, महोदय, मई दर्सन में जउन लखे रहेउँ, मई ओहसे बियाकुल अउ भयभीत अहउँ। मई अपने क बेसहारा समुझत हउँ। 17मई तोहार दास हउँ। मई तोहसे कइसे बात कर सकत हउँ? मोर सक्ति जात रहत ह। मोहसे तउ साँस भी नहीं लीन्ह जात ह।’

18“मनई जइसे देखात भए उ मोका फुन छुएस। ओकरे छुअत स मई मज़बूत बनि गवा। 19फुन उ बोला, ‘दानियेल, डेराअ जिन। परमेस्सर तोहसे बहोत पियरेम करत ह। तोहका साक्ति प्राप्त होइ। अब तू सुदृढ होइ जा। सुदृढ होइ जा।’

“उ मोहसे जब बात किहेस तउ मई अउर जियादा सक्तिसाली होइ गवा। फुन मई ओहसे कहेउँ, ‘सुआमी! आप तउ मोका सक्ति दइ दिहा ह। अब आप बोल सकत हीं।’

20“तउ उ फुन कहेस, ‘दानियेल’ का तू जानत अहा, मई तोहरे पास काहे आवा हउँ? फारस क जुवराज स जुद्ध करइ क बरे मोका फुन वापस जाब अहइ। मोरे चले जाइ क बाद युनान क जुवराज हिआँ आइ। 21किन्तु दानियेल आपन जाइ स पहिले तोहका सब स पहिले मोका इ बताउब अहइ कि सच क पुस्तक में का लिखा अहइ। ओन बुरे राजकुमारन क विरोध में मीकाएल सरगदूत क अलावा मोरे संग कउनो नहीं खड़ा होत। मीकाएल उ राजकुमार अहइ जउन तोहरे लोगने पइ हुकूमत करत ह।”

11 मादी राजा दारा क सासनकाल के पहिले बरिस मीकाएल क फारस क जुवराज क विरुद्ध जुद्ध में सहारा देइ अउर ओका ससक्त बनावइ क मई उठ खड़ा भवा।

2“अब लखा, दानियेल मई, तोहसे सच्ची बात बतावत हउँ। फारस में तीन राजा लोगन क सासन अउर होइ। इ एकरे पाछे एक चउथा राज्ज आइ। इ चउथा राज्ज अपने पहिले क फारस क दूसर राजा लोगन स कहुँ जियादा धनवान होइ। उ चउथा राजा सक्ति पावइ बरे आपन धन क प्रयोग करी। उ हर कउनो क युनान क विरोध में कइ देइ। 3एकर पाछे एक बहोत जियादा सक्तिसाली राजा आइ, उ बड़की सक्ति क संग सासन करी। उ जउन चाही उहइ करी। 4राजा क अवाई क पाछे ओकर राज्ज क टूका-टूका होइ जइहीं। ओकर राज्ज चारिहुँ कइँती तितर बितर होइ जाइ। ओकर राज्ज ओकर पूत पोतन क बीच नहीं बँटी। जउन सक्ति ओहमा रही, उहइ सक्ति ओकरे राज्ज में नहीं

होइ। अइसा काहे होइ? अइसा एह बरे होइ कि ओकर राज्ज उखाड़ दीन्ह जाइ अउर ओका दूसर लोगन क दइ दीन्ह जाइ।

5“दक्खिन क राजा सक्तिसाली होइ जाइ। किन्तु एकरे पाछे ओकर एक सेनापति ओह स भी जियादा सक्तिसाली होइ जाइ। उ सेना नायक हुकूमत करइ लागी अउर बहोत बलसाली जोइ जाइ।

6“फुन कछू बरिसन बाद एक समझोता होइ अउर दक्खिनी राजा क बिटिया उत्तरी राजा स बियाही जाइ। उ सान्ति कायम करइ बरे अइसा करी। किन्तु उ अउर दक्खिनी राजा पर्याप्त सक्तिसाली नाहीं होइहीं। फुन लोग ओकरे अउर उ मनई क जउन ओका उ देस में लाए रहा, खिलाफ होइ जइहीं अउर उ सबइ लोग ओकरे बच्चे क अउर उ मेहरारू क हिमाइती मनई क भी खिलाफ होइ जइहीं। 7कन्तु उ मेहरारू क परिवार क एक मनई दक्खिनी राजा क ठउर क लेइ बरे आई। उ उत्तर क राजा क फउज पइ हमला करी। उ राजा क सुदृढ़ किले में प्रवेश करी। उ जुद्ध करी अउर विजयी होइ। 8उ ओनके देवतन क मूर्तियन क लइ लेइ। उ ओनक धातु क बने मूर्तियन अउर ओनकर चाँदी-सोने क बहुमूल्य वस्तुअन क हुवाँ स मिस्र लइ जाइ। फुन कछू बरिसन तलक उ उत्तर क राजा क तंग नाहीं करी। 9उत्तर क राजा दक्खिन क राज्ज पइ हमला करी। किन्तु पराजित होइ अउर फुन अपने देस क लउटि जाइ।

10“उत्तर क राजा क पूतन जुद्ध क तइयारी करिहीं। उ पचे एक बिसाल फउज जुटइहीं। उ सेना एक सक्तिसाली बाइ क तरह बड़ी तेजी स धरती पइ अगवा बड़त चली जाइ। उ सेना दक्खिन क राजा क सुदृढ़ दुर्ग तलक सारे रास्ते जुद्ध करत जाइ। 11फिन दक्खिन क राजा क्रोध स तिलमिलाइ उठी। उत्तर क राजा स जुद्ध करइ बरे उ बाहेर निकरि आइ। उत्तर क राजा जदपि एक बहोत बड़ी सेना जुटाइ किन्तु जुद्ध में हार जाइ। 12“उत्तर क सेना पराजित होइ जाइ, अउर ओन फउजियन क कहुँ लइ जावा जाइ। दक्खिनी राजा क बहोत अभिमान होइ जाइ अउर उ उत्तरी सेना क हजारन-हजार फउजियन क मउत क घाट उतारि देइ। किन्तु उ जुद्ध करइ बरे लगातार नाहीं रहिहीं। 13उत्तर क राजा एक अउर सेना जुटाइ। इ सेना पहिली सेना स जियादा बड़ी होइ। कई बरिसन पाछे उ हमला करी। उ सेना बहोत बिसाल होइ अउर ओकरे लगे बहोत स हथियार होइहीं।

14“ओन दिनन बहोत स लोग दक्खिन क राजा क विरोध में होइ जाइहीं। कछू तोहार आपन लोग, जेनका जुद्ध प्रिय अहइ, दक्खिन क राजा क खिलाफ बगावत करिहीं। उ पचे जितिहीं तउ नाहीं किन्तु अइसा करत भए उ दर्सन क फुरइ सिद्ध करिहीं। 15फुन ओकरे बाद उत्तर क राजा आई अउर उ नगर क परकोटे पइ ढलवाँ चउतरा बनाइके उ सुदृढ़ नगर पइ कब्जा करी। दक्खिन क राजा क सेना जुद्ध क उत्तर नाहीं दइ पाई। हिआँ तलक कि दक्खिनी सेना क सर्वोत्तम सैनिक भी एतने सक्तिसाली नाहीं होइहीं कि उ पचे उत्तर क सेना क रोक पावईं।

16“उत्तर क राजा जइसा चाही, वइसा करी। ओका कउनो भी रोक नाहीं पाई। उ इ सुन्नर धरती पइ नियन्त्रन कइके सक्ति पाइ लेइ। ओका इ प्रदेस नस्ट करइ क सक्ति पाइ लेइ। 17फुन उत्तर क राजा दक्खिन क राजा स जुद्ध करइ बरे आपन सारी सक्ति का उपयोग करइ क निहचइ करी। उ दक्खिन क राजा संग एक सन्धि करी। उत्तर क राजा दक्खिन राजा स आपन एक बिटिया क बियाह कइ देइ। उत्तर क राजा अइसा एह बरे करी कि उ दक्खिन क राजा क हराइ सकइ। किन्तु ओकर उ सबइ योजना फली भूत नाहीं होइहीं। एन सबइ योजना स ओका कउनो मदद नाहीं मिली।

18“एकरे आगे उत्तर क राजा भूमध्य-सागर क तट स लगत भए देसन पइ आपन धियान लगाई। उ ओन देसा में स बहोत स देसन क जीत लेइ। किन्तु फुन एक सेनापति उत्तर क राजा क उ अहंकार अउर उ बगावत क अंत कइ देइ। उ सेनापति उ उत्तर क राजा क लज्जित करी।

19“अइसा घटइ क पाछे उत्तर क उ राजा खुद आपन देस क सुदृढ़ किलन कइती लउटि जाइ। किन्तु उ दुर्बल होइ चुका होइ अउर ओकर पतन होइ जाइ। फुन ओकर पता भी नाहीं चली। 20उत्तर क उ राजा क पाछे एक नवा सासक आइ। उ सासक कउनो कर वसूलइ वालन क पठइ। उ सासक अइसा एह बरे करी कि उ सम्पन्नता क संग जिनगी बितावइ बरे पर्याप्त धन जुटाइ सकइ। किन्तु थोड़े ही बरिसा में उ सासक क अंत होइ जाइ। किन्तु उ जुद्ध में नाहीं मारा जाइ।

21“उ सासक क पाछे एक बहोत क्रूर एवं घृणा जोग्ग मनई आइ। उ मनई क राज परिवार क बंसज होइ क गौरव प्राप्त नाहीं होइ। उ चालाकी स राजा बनी। जब लोग अपने क सुरच्छित समुझे हुए होइहीं, उ तबहिं राज्ज पइ आक्रमण करी अउर ओह पइ कब्जा कइ लेइ। 22उ बिसाल सक्तिसाली फउजन क हराई देइ। उ समुझौते क मुखिया क संग सन्धि करइ पइ भी ओका पराजित करइ। 23बहोत स राष्ट्र उ क्रूर एवं घिना जोग्ग राजा क संग सन्धि करिहीं किन्तु उ ओनसे मिथ्या स भरी चालाकी बरती। उ मज़बूत होइ जाई किन्तु बहोत थोड़े स लोग ही ओकर पच्छ में होइहीं।

24“जब उ प्रदेस क सर्वाधिक धनी छेत्र आपन क सुरच्छित अनुभव करत रहे होइहीं; उ क्रूर एवं घिना स भरे सासक ओन पइ हमला कइ देइ। उ ठीक समइ पइ हमला करी अउर हुवाँ सफलता प्राप्त करी जहाँ ओकरे पुरखन क सफलता नाहीं मिली रही। उ जउन देसन क पराजित करी ओनकर सम्पति छोरिके आपन पिछलगुअन क देइ। उ सुदृढ़ नगरन क पराजित करइ क सबइ योजना रची। उ कामयाबी तउ पाई किन्तु बहोत थोड़े स समइ बरे।

25“उ क्रूर एवं घिना जोग्ग राजा क लगे एक बिसाल फउज होइ। उ उ फउज क उपयोग आपन सक्ति अउर आपन साहस क प्रदर्सन बरे करी अउर एहसे उ दक्खिन क राजा पइ हमला करी। तउ दक्खिन क राजा भी एक बहोत बड़की अउर सक्तिसाली फउज जुटाइ अउर जुद्ध बरे कूच करी। 26किन्तु उ सबइ लोग जउन दक्खिन क राजा क

मीत समुझा जात रहेन छुपे-छुपे सबइ योजना रचिहीं अउर ओका पराजित करइ क जतन करिहीं। ओकर फउज पराजित कइ दीन्ह जाइ। जुद्ध में ओकर बहोत स फउजी मारा जइहीं। 27ओन दुइनउँ राजा लोगन क मन इहइ बात में लगी कि एक दूसर क नोस्कान पहोंचावा जाइ। उ पचे एक ही मेज पइ बइठिके एक दूसर स झूठ बोलिहीं किन्तु ओहसे ओन दुइनउँ में स कउनो क भला नाहीं होइ, काहेकि परमेस्सर ओनकर अंत आवइ क समइ निर्धारित कइ दिहिस ह।

28“बहोत स धन दौलत क संग, उ उत्तर क राजा अपने देस लउटि जाइ। फिन उ पवितर वाचा क बरे उ बुरे करम करइ क निर्णय लेइ। उ आपन जोगगता क अनुसार काम करी अउ फुन आपन देस लउटि जाइ।

29“फुन उत्तर क राजा ठीक समइ पइ दक्खिन क राजा पर हमला कइ देइ। किन्तु इ बार उ पहिले क तरह कामयाब नाहीं होइ। 30पच्छिम क जहाज अइहीं अउर उत्तर क राजा क विरुद्ध जुद्ध करिहीं। उ ओन जहाजन क आवत लखिने डर जाइ। फुन वापस लउटिके पवितर वाचा पइ आपन किरोध उतारी। उ लउटिके, जउन लोग पवितर वाचा पइ चलब छोड़ दिहे रहा, ओनकर मदद करी। 31फुन उत्तर क राजा यरूसलेम क मन्दिर क असुद्ध करइ बरे आपन फउज पठइ। उ सबइ लोगन क दैनिक बलि समर्पित करइ स रोकिहीं। एकरे पाछे उ सबइ हुवाँ कछू अइसा भयानक घिनौनी वस्तु स्थापित करिहीं जउन फुरइ विनास करइवाला होइ। उ पचे अइसा खौफनाक काम करिहीं जउन विनास क जनम देत ह।

32“उ उत्तरी राजा लबार अउ चिकनी चपड़ी बातन स ओन यहूदियन क छली जउन पवितर वाचा क पालन करब तजि चुका अहई। उ पचे यहूदी अउर बुरे पाप करइ लगिहीं किन्तु उ सबइ यहूदी, जउन परमेस्सर क जानत हीं, अउर ओकर अनुसरण करत हीं, अउर जियादा सुदृढ़ होइ जइहीं। उ सबइ पलटिके जुद्ध करिहीं।

33“उ सबइ यहूदी जउन विवेकपूर्ण अहई जउन कछू घट रहा होइ, दूसर यहूदियन क ओका समुझइ में मदद देइहीं। किन्तु जउन विवेकपूर्ण होइहीं ओनका तउ मृत्यु दण्ड तलक झेलइ होइ। कछू समइ तलक ओनमाँ स कछू यहूदियन क तरवार क घाट उतारा जाइ अउर कछू आगी में झोकं दीन्ह जाइ। अथवा बन्दी गृहन में डाइ दीन्ह जाइ। ओनमाँ स कछू यहूदियन क घर बार अउर धन दौलत छोर लीन्ह जइहीं। 34जब उ पचे यहूदी दण्ड भोग रहे होइहीं तउ ओन विवेकपूर्ण यहूदियन साथ देइहीं, बहोत स केवल देखावा क होइहों। 35कछू विवेकपूर्ण यहूदी मार दीन्ह जइहीं। अइसा एह बरे होइ कि उ पचे अउर जियादा सुदृढ़ बनई, स्वच्छ बनई अउ अंत समइ क आवइ तलक निर्दोस रहई। फुन ठीक समइ पइ अंत होइ क समइ आइ जाइ।”

आत्म प्रसंसक राजा

36“उत्तर क राजा जउन चाही, सो करी। उ आपन बारे में डींग हॉकी। उ आत्म प्रसंसा करी अउ सोची कि उ कउनो देवता स भी अच्छा अहइ। उ अइसी बातन करी

जउन कउनो कबहुँ सुनी तलक न होइहीं। उ देवतन क परमेस्सर क विरोध में अइसी बातन करी। उ उ समइ तलक कामयाब होत चला जाइ जब तलक उ पचे सबहिं बुरी बातन घट नाहीं जातिन। किन्तु परमेस्सर जउन योजना रची ह, उ तउ पूरी होइ ही।

37“उत्तर क उ राजा ओन देवतन क उपेक्षा करी जेनका ओकर पुरखन पूजा करत रहेन। ओन देवतन क मूर्तियन क उ परवाह नाहीं करी जेनकर पूजा मेहररून करत हीं। उ कउनो भी देवता क परवाह नाहीं करी बल्कि उ खुद आपन तारीफ करत रही अउर अपने आप क कउनो भी देवता स बड़का मानी। 38अपने पुरखन क देवता क अपेक्षा किले क देवता क पूजा करी उ सोना, चाँदी, बहुमूल्य हीरे जवाहरात अउर दूसर उपहारन स एक अइसे देवता क पूजा करी जेका ओकर पुरखन जानत तलक नाहीं रहेन।

39“इ विदिसी देवता क मदद स उ उत्तर क राजा सुदृढ़ गढ़ियन पइ हमला करी। उ ओन लोगन क सम्मान देइ जेनका उ बहोतइ पसन्द करी। उ बहोत स लोगन क ओनके अधीन कइ देइ। अउर उ ओनका भुइँया बाँट देइहीं जउन ओका एकर बरे पैसा भुगतान करिहीं बरे ओनसे भुगतान लिया करी।

40“अंत आवइ क समइ उत्तर क राजा, उ दक्खिन क राजा क संग जुद्ध करी। उत्तर क राजा ओह पइ हमला करी। उ रथन, घुड़सवारन अउर बहोत स बिसाल जलयानन क लइके ओह पइ चड़ाई करी। उत्तर क राजा बाइ क नाई वेग स उ धरती पइ चढ़ आई। 41उत्तर क राजा ‘सुन्नर धरती’ पइ हमला करी। उत्तरी राजा क जरिये बहोत स देस पराजित होइहीं किन्तु एदोम, मोआब अउ अम्मोनियन क मुखिया लोगन क ओहसे बचा लीन्ह जाइहीं। 42उत्तर क राजा बहोत स देसन में आपन सक्ति देखाइ। मिस्त्र क भी ओकर सक्ति क पता चल जाइ। 43उ मिस्त्र क सोने चाँदी क खजानन अउ ओकर समूची सम्पति क छोरि लेइ। लूबी अउर कूसी लोग भी ओकरे अधीन होइ जइहीं। 44किन्तु उत्तर क उ राजा क पूरब अउ उत्तर स एक समाचार मिली जेहसे उ भयभीत होइ उठी अउर ओका किरोध आइ। उ बहोत स देसन क तबाह कइ देइ क बरे उठी। 45उ आपन राजकीय तम्बू समुद्र अउ सुन्नर पवितर पर्वत क बीच लगवइ। किन्तु आखिरकार उ बुरा राजा मरि जाइ। जब ओकर अंत आइ तउ ओका सहारा देइवाला हुवाँ कउनो नाहीं होइ।”

12 “दर्सनवाला मनई कहेस, ‘हे दानियेल, तउ उ समइ मीकाएल नाउँ क सरगदूत तोहार लोगन क रच्छा करइ बरे उठ खड़ा होइ। फुन एक बिपत्तिपूर्ण समइ आइ। उ समइ सबन त भयानक होइ, जेतना भयानक उ धरती पइ, जब स कउनो जाति अस्तित्व में आई बाटइ, कबहुँ नाहीं आइ होइ। किन्तु हे दानियेल, उ समइ तोहरे लोगन में स हर उ मनई जेकर नाउँ, पुस्तक में लिखा मिली, बच जाइ। 2धरती क उ सबइ अनगिनत लोग जउन मरि चुका अहई अउर जेनका दफनावा जाइ चुका अहइ,

उठ खड़ा होइहीं अउर ओनमाँ स कछू अनन्त जीवन जिअइ बरे उठि जइहीं। किन्तु कछू एह बरे जागिहीं कि ओनका कबहुँ नाहीं समाप्त होइवाली लज्जा अउर घिना प्राप्त होइ। 3अकासे क भव्यता क नाई बुद्धिमान पुरुस चमक उठिहीं। अइसे बुद्धिमान पुरुस जउन दूसरन क अच्छी जिन्नगी क राह देखाए रहेन, अनन्त काल बरे तारन क समान चमकइ लगिहीं।

4“किन्तु हे दानिय्येल! इ सन्देश क तू छिपाइके रख द्या। तोहका इ पुस्तक बन्द कइ देइ चाही। तोहका अंत समइ तलक इ रहस्य क छुपाइके रखब अहइ। सच्चा गियान पावइ बरे बहोत स लोग एहर-ओहर दउइ करिहीं अउर इ तरह सच्चे गियान क विकास होइ।’

5“फुन मई, दानिय्येल निगाह उठाएउँ अउर दुइ अलग-अलग मनइयन क लखेउँ। ओनमाँ स एक मनई नदी क हरेक किनारे खड़ा भवा रहा। 6उ मनई जउन सन क ओढ़ना पहिर रखे रहा, नदी में पानी क बहाव क विरुद्ध खड़ा रहा। ओन दुइनउँ में स कउनो एक ओहसे पूछेस, ‘एन अचरजे स पूर्ण बातन क खतम होइ में अबहुँ केतना समइ लागी?’

7“उ मनई जउन सन क ओढ़ना धारण किहे भवा रहा अउर जउन नदी क जल क बहाव क विरुद्ध खड़ा भवा रहा, उ आपन दाहिन अउ बायाँ-दुइनउँ हाथ अकासे कइँती उठाएस। मई उ मनई क अमर परमेस्सर क नाउँ क प्रयोग

कइके एक किरिया बोलत भए सुना। उ कहेस, इ साढ़े तीन बरिस तलक घटी। पवितर जन क सक्ति टूट जाइ अउर फुन इ सबइ बातन अंतिम रूप स खतम होइ जइहीं।’

8“मई इ उत्तर सुनेउँ तउ रहा किन्तु वास्तव में मई ओका समुझेउ नाहीं। तउ मई पूछेउँ, ‘हे महोदय, एन सबहिं बातन क फुरइ निकरइ क पाछे का होइ?’

9“उ उत्तर दिहस, ‘दानिय्येल, तू आपन जिन्नगी जिअइ जा। इ सँदेश गुप्त अहइ अउर जब तलक अंत समइ नाहीं आइ, इ गुप्त ही बना रही। 10बहोत स लोगन क सुद्ध कीन्ह जाइ। उ लोग खुद अपने आप क स्वच्छ करिहीं किन्तु दुस्त लोग, दुस्त ही बना रहिहीं उ सबइ दुस्मन लोग एका नाहीं समुझिहीं। किन्तु बुद्धिमान लोग एका समुझिहीं।

11“उ दिना स लइके बलि रोक दीन्ह जाब्या एक हजार दुइ सौ नब्बे दिन होइ जाब्या जब तलक खउफनाक चीज़ जउन तबाह करत अहइ स्थापित कीन्ह जाब्या। 12उ मनई जउन प्रतीच्छा करत भए एन एक हजार तीन सौ पैतीस दिनन क समइ क अंत तलक पहोंची, उ बहोत अधिक भाग्गसाली होइ।

13“हे दानिय्येल! जहाँ तलक तोहार बात अहइ, जा अउर अंत समइ तलक आपन जिन्नगी जिआ। तोहका तोहार बिस्त्राम प्राप्त होइ अउर अंत में तू आपन हींसा पावइ बरे मौत स फुन उठ खड़ा होब्या।”